ALL NEW

APRIL, 2024 ₹150

मुलाकातें

कुछ कही कुछ अनकही बातें

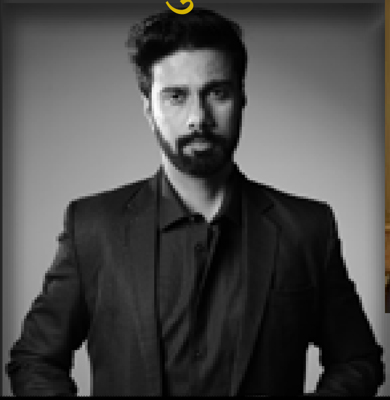

हिंदी पत्रकारिता विभाग

2023-24

शिवम नायर

मनीष गुप्ता

राकेश चतुर्वेदी ओम

सहर्ष कुमार शुक्ला

अलका अमीन

सहित 21 कलाकारों के साक्षात्कार

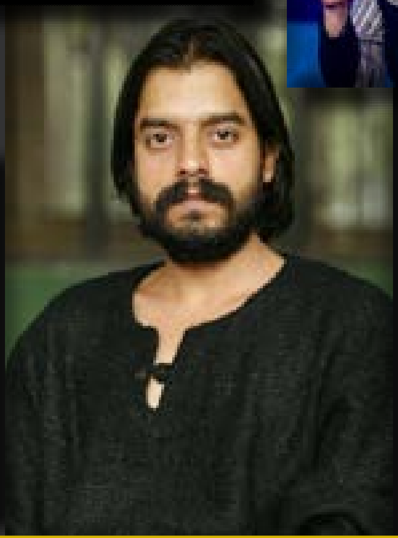

FILMS I FASHION I LIFESTYLE

साक्षात्कार

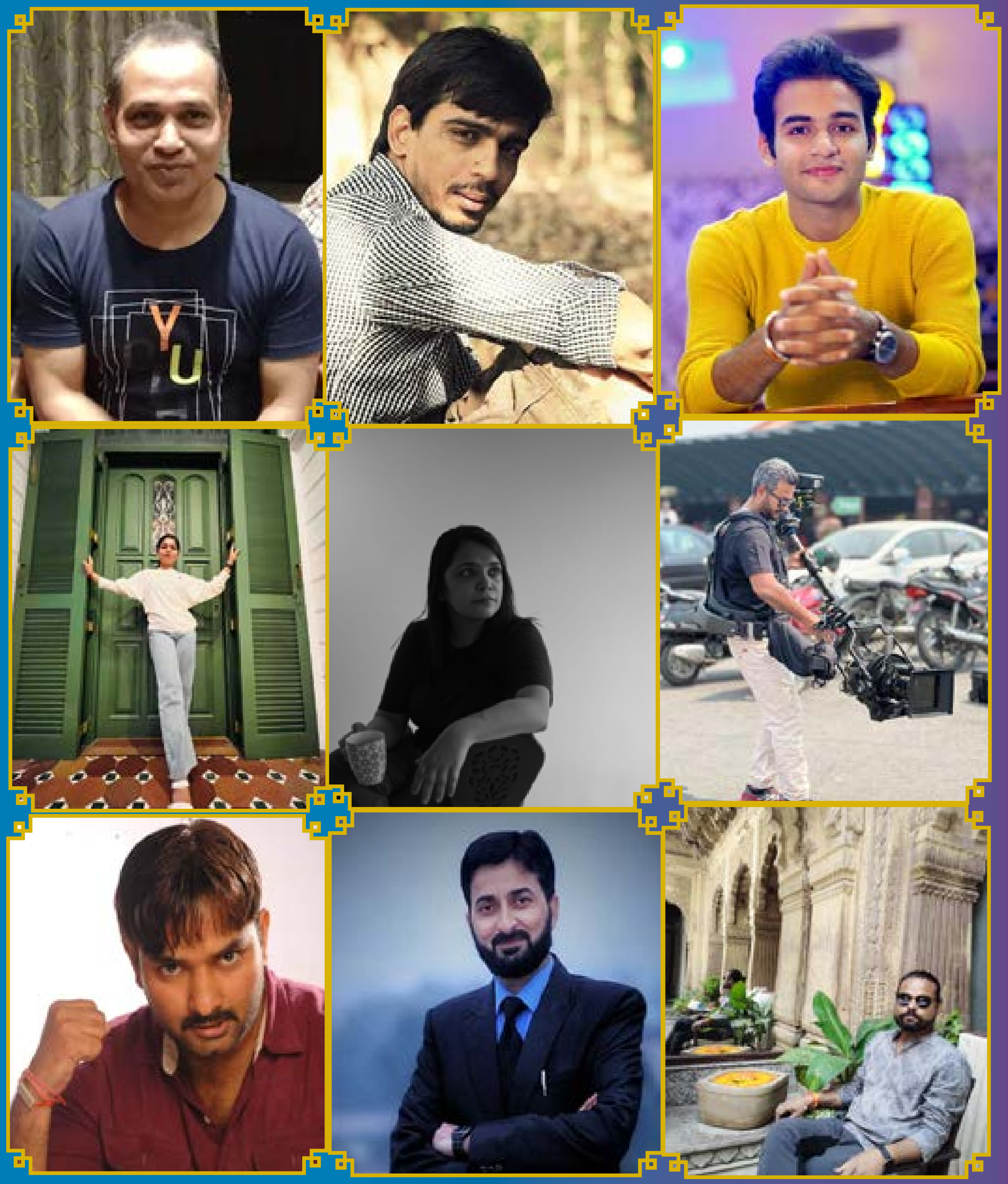

“आप यह पत्रिका पढ़ रहे हैं, तो यह आपकी फिल्म संबंधी जानकारियों में इजाफा और सकारात्मक दृष्टि में वृद्धि करेगी”

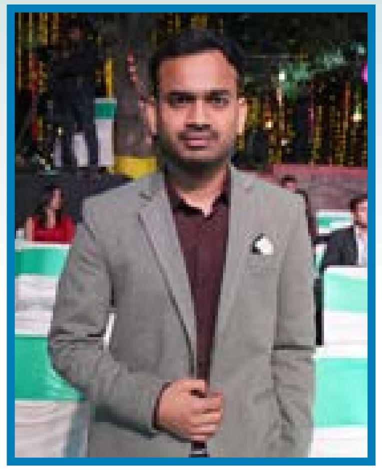

इस पत्रिका में बॉलीवुड के अभिनेता, अभिनेत्री, सह-कलाकार, निर्देशक, कला निर्देशक और स्टीडिकैम ऑपरेटरों के साक्षात्कार शामिल हैं। साक्षात्कार को लिखते समय हिंदी के साथ आम बोल-चाल में उपयोग होने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। पत्रिका के प्रारंभ से अंतिम रूप देने तक प्रो. आंनद प्रधान, प्रो. पवन कौंडल और मेरे साथियों ने पूर्ण रूप से सहयोग किया है। जिनके नाम का उल्लेख पहले पन्ने पर किया गया है। इस पत्रिका के जरिए बॉलीवुड की सकारात्मक और नकारात्मक बातें, फिल्मी करियर, बॉलीवुड में अवसर तलाश रहे कलाकारों को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और बॉलीवुड में महिलाओं की स्थिति कैसी है। इन विशेष मुद्दों पर चर्चा की गई है। उम्मीद है कि आपको साक्षात्कार पढ़ते समय नई और रोचक जानकारियां मिलेंगी। साक्षात्कार में शामिल सभी कलाकारों ने अपने अच्छे और बुरे अनुभवों को साझा किया है। आप इन सब बातों से अवगत होंगे।

संपादक - राजप्रताप सिंह

उप संपादक - कपिल शुक्ला, अवनीश चौधरी, आर्यन आदर्श

कॉपी एडिटर - अजय साह, राजप्रताप सिंह, राम सिंह

संवाददाता - किशन सिंह, अभयजीत यादव, राजप्रताप सिंह, अवनीश चौधरी, राम सिंह

सहायक लेखक - कपिल शुक्ला, डेविड कुमार शर्मा, रोहित कुमार, आशुतोष चौबे

प्रूफ रीडर - अजय साह

डिजाइनर - राम सिंह

फाइनल प्रूफ रीडर - डॉ. आदित्य कुमार मिश्रा, अकादमिक-सह-शिक्षण सहयोगी,

भारतीय जन संचार संस्थान

हिंदी पत्रकारिता 2023-24

भारतीय जन संचार संस्थान

जेएनयू न्यू कैंपस, अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली 110067

गोपनीयता और सूचना की सुरक्षा के लिए अस्वीकरण

शॉर्ट मैसेजिंग सर्विसेज (एसएमएस) कुंजी कोड या हमारी ऐसी अन्य सदस्यता सेवा के उपयोगकर्ताओं/सब्सक्राइबरों की प्रतिक्रियाओं के माध्यम से हमें प्राप्त कोई भी जानकारी, हमारे प्रकाशनों में (संपर्क जानकारी के अलावा), हमारे शोध के लिए, पूर्ण या आंशिक रूप से उपयोग की जाएगी। व्यक्तिगत विपणन, रणनीतिक ग्राहक विश्लेषण और अन्य आंतरिक उद्देश्यों के लिए और ऐसी जानकारी के सभी कॉपीराइट हमारे पास रहेंगे। आपकी संपर्क जानकारी तब तक नहीं बेची जाएगी, व्यापार नहीं की जाएगी, किराये पर नहीं दी जाएगी या किसी तीसरे पक्ष को किसी भी तरह से प्रकट नहीं की जाएगी जब तक कि हम ऐसा करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य न हों।

क्रमांक

1. निर्देशक के पास बहुत सारी चुनौतियां होती हैं	6-7
2. मेरी सोच अलग है, मुझे स्टार अभिनेता नहीं चाहिये	8-9
3. भूखे पेट आदमी को कुछ नहीं मिलता	10-11
4. बॉलीवुड में अब महिलाओं की स्थिति बदल गयी है	12-13
5. वो मेरी ज़िंदगी के सबसे खूबसूरत तीन साल थे	14-15
6. हर एक कलाकार की अपनी किस्मत होती है	18-19
7. ईश्वर से प्रार्थना करता हूं सभी माध्यमों का भविष्य उज्जवल हो	20-21
8. कलाकार बहुत इमोशनल होता है	22-23
9. भगवान की कृपा से मेरे पास सब कुछ है	24-25
10. आई थिंक कल्चर की बाउंड्रीज़ नहीं होनी चाहिए	26-27
11. एक्टर टॉम हेंग्स के साथ काम करना चाहती हूं	30-31
12. कोई बात आपके लिए विवादित हो सकती है मेरे लिए नहीं	32-33
13. ये मदारियों का देश है, यहां खिलौने नहीं खेल बिकते हैं	34-35
14. अगर मैं अभिनेत्री नहीं होती तो पायलट बनती	36-37
15. मैं पहले लोगों के सामने नहीं बोल पाती थी	38-39
16. लोकतांत्रिक देश में पुलिस की गोलियों से 80 लोग मारे जाते हैं?	42-43
17. कल्पना को पर्दे पर उतारना चुनौतीपूर्ण	44-45
18. सच्चे दिल से कोशिश करने वाले, हर टीम में अपनी जगह बना सकते हैं	46-47
19. मध्यप्रदेश में आर्टिस्ट बहुत कम प्राइस में मिल जाते हैं	48-49
20. शाहरुख ख़ान के ऊपर तो मैं किताब लिख सकता हूं	50-51
21. किसान के बेटे भानुप्रताप ने बॉलीवुड में लहराया परचम	52-53

शिवम नायर एक भारतीय फिल्म और टेलीविजन निर्देशक और संपादक हैं, जो अपने टेलीविजन धारावाहिक सी हॉक्स और उनकी 2006 की फिल्म 'आहिस्ता-आहिस्ता' के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं। नायर 1982 से टेलीविजन उद्योग में काम कर रहे हैं, और कई टेलीविजन श्रृंखलाओं में शामिल रहे हैं। प्रस्तुत है हाल में शिवम नायर से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

फिल्म को फ्लोर (सेट) पर आने के बाद क्या चुनौतियां आती हैं?

आपने जो लोकेशन ढूंढ रखी हैं, वो आपके शूट के मुताबिक नहीं है, आप दिन में शूट करना चाहते हैं या रात में। दिन में शूट कर रहे हैं तो सूरज की पोजीशन अपने अनुसार बदल गई। सर्दी के दिनों में शूट कर रहे हैं तो आपको पता चलता है कि सूरज जल्दी ढल जाता है। इस प्रकार बहुत सारी अनियोजित (अनप्लांड) चीजें होती रहती हैं। निर्देशक के पास बहुत सारी चुनौतियां होती हैं। मौसम और लोकल लोग भी हमारे शूट में खलल डालते हैं।

अभिनेता ही प्रोड्यूसर हो तो निर्देशक के ऊपर कौन सी अतिरिक्त जिम्मेदारियां आती हैं?

अगर एक्टर ही प्रोड्यूसर है तो एक्टर को खुद अनुशासन में रहना पड़ता है कि कम समय और बजट में फिल्म खत्म करनी है। अगर डायरेक्टर ने स्क्रिप्ट लिखी है और दोनों के बीच में ट्यूनिंग अच्छी है तो फिल्म बेहतर तरीके से उभरकर आती है।

निर्देशक के पास बहुत सारी चुनौतियां होती हैं।

फिल्म मेकिंग में धीरे-धीरे नई तकनीकें आ रही हैं, आप इसे किस नजरिए से देखते हैं?

तकनीक को आगे आने से रोक नहीं सकते हैं। अलग-अलग रूपों में कहानी कही जाती रही हैं। सिनेमा ने कहानी कहने के तरीके को बदला है, जैसे वीएफएक्स के जरिए अब कई बार नई जगह जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। ग्रीन बैकग्राउंड पर शूट करके वीएफएक्स होता है। आगे भी अच्छी तकनीकें आयेंगी, ये सब की जानकारी बहुत ज़रूरी है। आपको अच्छी कहानी कहनी है यह सीखना तकनीक से भी ज्यादा जरूरी है। तकनीकी सिर्फ एक टूल है।

दर्शक बॉलीवुड की हॉलीवुड फिल्मों से तुलना करते हैं, क्या यह सही है?

यह सवाल थोड़ा अजीब है, क्योंकि इस डिजिटल युग में यहाँ का सिनेमा और वहाँ का सिनेमा दोनों जगह देखा जा रहा है। अपने देश में ही हम अलग-अलग भाषाओं की फिल्मों को देखते हैं। जो मूवी अच्छी है वो सभी देख रहे हैं। हॉलीवुड तकनीकी, क्राफ्ट और कहानी कहने के तरीके में बॉलीवुड से आगे है। उनकी फ़िल्में देखकर हमारे लोग ग्रो करेंगे, अगर उनसे हमको कम्पीट करना है तो उनके जैसा काम करना पड़ेगा। अपने गाँव और कस्बे की कहानियों को भावनाओं के साथ ट्रीट करना होगा।

आप अच्छी कहानी का चयन कैसे करते हैं?

ये अपना-अपना चयन है। हमारे पास पढ़ने के लिए बहुत सारी कहानियां होती हैं, उनको पढ़ते हैं। हम देखते हैं कि कहानी का रस क्या है, मूल रूप से कहानी क्या कहना चाहती है। कहानी में क्या दिख रहा है और क्या नहीं दिखा रहा है। अच्छी कहानी में यह सब देखना बहुत जरूरी होता है।

ऐसी कुछ फिल्मों के नाम जो समाज में लोगों को जरूर देखनी चाहिए?

कोई भी आशावादी कहानी जो मानव को सही रूप में बदलने की बात करे। जैसे "आनंद" फिल्म को जरूर देखना चाहिए। राजेश खन्ना और अमिताभ की यह फिल्म बताती है कि जीवन का एक क्षण कितना जरूरी है और कितने आनंद के साथ जिया जा सकता है। ऐसी ही एक और फिल्म है "दो आँखें बारह हाथ" एक कैदी की कहानी है। इस तरह की कहानियाँ दर्शकों को अंतर्दृष्टि देती हैं। जातिवाद पर एक फिल्म "सुजाता" है जिसको जरूर देखना चाहिए।

सोशल मीडिया पर हैशटैग बॉयकॉट बॉलीवुड नाम से ट्रेंड चलता रहता है, उस पर आपकी क्या राय है?

कोविड के बाद कुछ गलत कारनामों की वजह से ऐसा देखने को मिला है। जैसे सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले ने लोगों को एक तरह से मजबूर किया। बॉलीवुड में अच्छे लोग भी हैं लेकिन कुछ लोगों का काम पैसा बनाना है। अभी तेलुगू- तमिल सिनेमा हमारे यहाँ खूब कमाई कर रहे हैं वो मनोरंजक फिल्में दे रहे हैं, लोगों को पसंद भी आ रही हैं उनकी फिल्में। जो भी सच से भरी कहानी कहेगा उसकी फिल्में चलेंगी।

जॉन अब्राहम की फिल्म 'सत्यमेव जयते' कुछ खास कमाल नहीं कर पाई, आप उनके साथ नई फिल्म लेकर आ रहे हैं। इसके बारे में कुछ बताइए?

हमारी कहानी भू-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है, बॉलीवुड की टिपिकल गाना दिखाने वाली वाणिज्यिक कहानी नहीं है। जॉन इस फिल्म में डिप्लोमेट का किरदार निभा रहे हैं। इस रोल में वो फिट बैठते हैं, इस फिल्म में उनको कास्ट इसलिए किया कि यह रोल उनके लिए सूट करता है। हमारी कहानी एक अद्वितीय है। कहानी अच्छी है तो लोग फिल्में देखने आते हैं।

मेरी सोच अलग है मुझे स्टार अभिनेता नहीं चाहिये

मनीष गुप्ता बॉलीवुड में एक भारतीय लेखक और निर्देशक हैं। गुप्ता ने अपना करियर पटकथा लेखक के रूप में आरम्भ किया। उनकी लेखक के रूप में अमिताभ बच्चन, अभिषेक बच्चन और कैटरीना कैफ अभिनीत फ़िल्म सरकार से शुरूआत हुई। प्रस्तुत है हाल में मनीष गुप्ता से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

आपको प्रोड्यूसर बनकर कैसा लगा?

मैंने बहुत सारी फिल्में बनाई हैं। मैंने छह फिल्मों का निर्देशन किया है, जिनमें मैं प्रोड्यूसर भी रहा हूं। अपनी फिल्म को कंट्रोल करने के लिये और उसे सही दिशा देने के लिये एक डायरेक्टर (निर्देशक) को प्रोड्यूसर बनना ही पड़ता है।

नई फिल्म लेखन के लिये आइडिया कैसे आते हैं ?

हमारे समाज में क्या हो रहा है, हमारे आसपास क्या चल रहा है। ये सब चीजें देखकर, नई फिल्मों के लिये ज्यादातर आइडिया यहीं से आते हैं।

फिल्म के क्षेत्र में पढ़ाई कितनी महत्वपूर्ण है ?

पढ़ाई दो तरह की होती है- पहली थ्योरी वाली पढाई, जो आप फिल्मी स्कूलों में जाकर पढ़ते हैं और दूसरी प्रैक्टिकल वाली पढ़ाई जो आप किसी डायरेक्टर के साथ रहकर, काम करके सीखते हैं। थ्योरी वाली पढ़ाई कोई काम की नहीं होती है। फिल्म में काम करके आपको जो शिक्षा मिलती है, उससे बड़ी कोई शिक्षा नहीं है।

आप अपनी फिल्म में कैसे कलाकारों को मौका देते हैं?

मैं अपनी फिल्म में उन कलाकरों को मौका देता हूं जो अच्छे अभिनेता हैं। कुछ डायरेक्टर केवल स्टार को लेते हैं। चाहे उनको काम आता हो या न आता हो। मेरी सोच अलग है मुझे स्टार अभिनेता नहीं चाहिये। मुझे वो कलाकार चाहिये जो अच्छे हैं। जिनसे हमारी फिल्म अच्छी बन सके। मुझे अपनी फिल्म के लिये के.के मेनन, मिलिंद सोमन, रणवीर शौरी, आशीष विद्यार्थी, विनय पाठक और वत्सल सेठ ठीक लगते हैं।

अगर आपसे कोई फिल्म लिखना सीखे, तो वह कैसे सीख सकता है ?

इसकी कोई प्रकिया नहीं है। मैं कोई वर्कशॉप वगैरह आयोजित नहीं करता हूं, क्योंकि मेरे पास समय नहीं होता है। मेरे साथ काम करके ही लोग सीखते हैं।

आप अपनी आने वाली नई फिल्म के लिये, किस एक्टर के साथ काम करना चाहते हैं ?

मैं एक्टर के हिसाब से स्क्रिप्ट नहीं लिखता हूं। मैं पहले स्क्रिप्ट लिखता हूं, फिर सोचता हूं कि किसके साथ काम करना है।

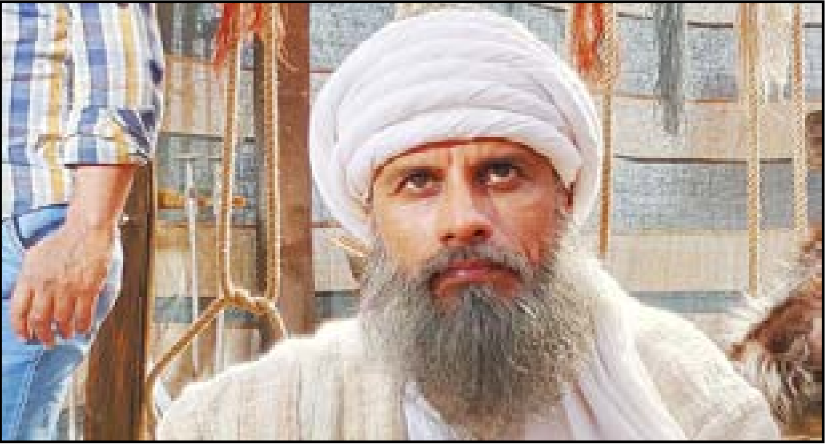

भूखे पेट आदमी को कुछ नहीं मिलता

नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) से पास आउट, 'पैडमैन' और 'केसरी' जैसी फिल्मों में बेहतरीन अभिनय करने वाले "राकेश चतुर्वेदी ओम" हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में चर्चित नाम हैं। निर्देशन और लेखक के तौर पर भी निरंतर काम करते रहते हैं। हाल ही में राकेश ओम द्वारा निर्देशित फिल्म "मंडली" रिलीज हुई। जिसे सिनेमा घरों में भरपूर प्यार मिला। फिल्म को जल्द ही ओटीटी प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। प्रस्तुत है हाल में राकेश चतुर्वेदी ओम से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

आप एक बेहतरीन कलाकार हैं, फिर आपने फिल्म निर्देशक के तौर पर करियर बनाने के बारे में क्यों सोचा?

दरअसल, फिल्म निर्देशन करियर के तौर पर कहूँ तो ऐसा कुछ सोचा नहीं था। आपके सामने सर्वाइविंग की परेशानी होती है। मैंने कास्टिंग डायरेक्टर और प्रोडेक्शन में भी असिस्ट किया है। जब मैं बतौर एक्टर नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से पास आउट होकर मुंबई आया। उस समय ऐसा दौर था कि टीवी में लम्बे चौड़े 6 फुट के एक्टर, मॉडल लड़कों को ज्यादा काम मिलता था, चाहे वह विलेन हो या हीरो। जैसा काम करना चाह रहा था वैसा मिल नहीं रहा था। सर्वाइविंग के लिए मैंने बहुत सारी चीजें करनी शुरू कर दी। पैसा पाने के चक्कर में मैंने डायरेक्टर्स को अस्सिट किया ताकि किसी भी तरह से सर्वाइविंग करूं। मेरे स्टूडेंट के भाई अपने भाई के लिए "बोलो राम" फिल्म बना रहे थे इस फिल्म के जरिए मुझे निर्देशन का चांस मिला।

डायरेक्टर को अच्छी स्टोरी से लेकर फिल्म रिलीज करने तक, किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?

उसको मार्केट का ख्याल रखना पड़ता है। फिल्म को शूट कैसे करेगा, उसकी रिकवरी कैसे होगी। समय के अनुसार फिल्म शूट करें, उसके प्रोड्यूसर ने जो बजट दिया है उसका विशेष ध्यान रखें। उसकी जिम्मेदारी है इतने में काम खत्म करे। अभिनेता और पूरी टीम से काम निकलवाने की कोशिश करे। अच्छी स्टोरी सर्च करनी पड़ती है, लेकिन फिल्म बनने के बाद ही पता चलता है कहानी अच्छी है या बुरी। सब अपने हिसाब से अच्छा बना रहे होते हैं।

फिल्म की कहानी को लिखने के कुछ टिप्स बताइए?

कहानी कोई भी हो, उसको स्क्रीन पर कैसे कहना है ये बहुत इम्पोर्टेंट है। दर्शकों और श्रोताओं से कहानी कनेक्ट हो, पूरी कहानी मनोरंजन पूर्ण हो। कहानी के अन्दर कोई एक बात ऐसी कहें जिससे समाज को सन्देश देने की जरुरत है। उपदेशात्मक न बनाएं, मनोरंजन के साथ कहें, अच्छी कहानी हमेशा आपके जीवन के आस-पास ही मिलेगी। जिस घटना से आप क्लिक कर पायेंगे उसी घटना को कहानी का रूप दे दें।

आपने निर्देशकों के निर्देश में एक एक्टर के रूप में अभिनय किया है और डायरेक्टर के रूप में, एक्टरों से अभिनय भी करवाया है, दोनों में क्या समानताएं हैं?

दोनों में समानता ये हैं, बतौर एक्टर समझ जाता हूँ कि निर्देशक क्या चाहता है। डायरेक्टर के तौर पर कलाकारों से काम कैसे निकलवाना है। एक्टर कितना सेंसिटिव होता है, ये भी समझ गया। डायरेक्टर कितनी परेशानी में होता है ये भी समझ गया।

फिल्म केसरी में रोल कैसे मिला, इसके बारे में कुछ बताएं?

मैं नसीरुद्दीन शाह के साथ थियेटर करता रहता हूँ। कास्टिंग डायरेक्टर जोगी भाई जो खुद थियेटर करते हैं। बहुत अच्छे कास्टिंग डायरेक्टर हैं। उन्होंने मेरे प्ले देखे हैं, उन्होंने मेरे बारे में फिल्म निर्देशक अनुराग सिंह को बताया कि एक बार इस लड़के को ट्राई करके देख सकते हैं। उन सब ने आकर मेरा प्ले देखा उसके जरिए मुझे काम मिला।

अक्सर मैंने डायरेक्टर, प्रोड्यूसर अभिनेता और अभिनेत्रियों से सुना है कि फिल्म बनाना आसान है, लेकिन रिलीज करना मुश्किल है, इस बात में कितनी सच्चाई है?

बहुत ही सच बात है और अटल सत्य है। आपने कहानी लिखी, प्रोड्यूसर को सुनाया। उसे पसंद आई प्रक्रिया आगे बढ़ी, टीम इकट्ठी हुई पैसा लगाया शूट की। अब आपके सामने प्रमोशन और रिलीज की परेशानी है। छोटी फिल्मों के सामने ये बहुत बड़ी मुश्किल है, शो मिलेंगे या नहीं मिलेंगे। इसके लिए मैं बोल भी चुका हूँ। थिएटर वालों के साथ ये मैंडेटरी हो जाए की शुरुआत के तीन दिन शो मिलें अगर तीन दिन में फिल्म अच्छा परफॉर्म नहीं कर रही है तो हटा दें। छोटे फिल्म के प्रोड्यूसर को करेक्ट डिस्ट्रीब्यूटर नहीं मिल पाते हैं या फिल्म के प्रमोशन का पैसा नहीं होता है। जितना अमाउंट फिल्म में शूट के खर्च हुए हैं, उतना ही अमाउंट प्रमोशन के लिए रखना चाहिए। बड़ी फिल्मों के लिए ये आमने-सामने की परेशानी होती है कि सामने कौन-सी फिल्म आ रही है।

बॉलीवुड में अब महिलाओं की स्थिति बदल गयी है

अलका अमीन एक भारतीय फिल्म, टेलीविजन और थिएटर अभिनेत्री हैं। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्हें 'दम लगा के हईशा' , 'शादी में जरूर आना' , 'लुका छुपी' , 'केदारनाथ' , 'रोमियो अकबर वाल्टर' , 'बधाई हो' और वेब सीरीज 'चाचा विधायक हैं हमारे' जैसी बॉलीवुड फिल्मों में उनके प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। अलका अभिनेत्री के रूप में असंख्य लोगों को प्रभावित कर रही हैं। प्रस्तुत है हाल में अलका अमीन से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

आपने जिस समय अभिनेत्री बनने का सपना देखा था तो किन-किन लोगों ने आपका विरोध किया?

मेरा पूरा परिवार कलाकारों का परिवार है। मेरे पिता, माता और बहन भी कलाकार हैं, इसलिए मुझे किसी का विरोध नहीं झेलना पड़ा।

आप बॉलीवुड के किस डायरेक्टर के काम से प्रभावित हैं?

कोई एक नहीं है, मुझे बहुत लोगों का काम अच्छा लगता है। खासतौर से जिनके साथ मैंने काम किया है, वे सब मुझे अच्छे लगते हैं।

आमतौर पर आप किससे प्रेरित होती हैं?

मेरे लिए ऐसी कोई खास चीज नहीं है, जिससे मैं प्रेरित हो रही हूं। मैं हर चीज से प्रेरित होती हूं। यहां तक कि मैं छोटे बच्चों से भी प्रेरित होती हूं। मुझे हर वो चीज प्रेरित करती है, जिससे मुझे खुशी मिलती है।

आप खाली समय में क्या करना पसंद करती हैं?

मैं खाली समय में मूवी, टीवी शो देखती हूं। मुझे लिखना पसंद है, इसलिए मैं लिखती भी हूं।

आजकल के युवा बहुत जल्दी निराश हो जाते हैं, असफल होने के डर की वजह से आत्महत्या कर लेते हैं, युवाओं को कुछ संदेश देना चाहेंगी?

जब आप सच्चे दिल से किसी चीज की कोशिश करते हैं, तो वो आपको मिल ही जाती है। अगर एक पर्सेंट नहीं भी मिलती है तो रास्ता बदलना गुनाह है क्या? आपको अपना रास्ता बदल लेना चाहिये। मुझे लगता है कि जीवन में निराशा की कोई जगह नहीं होनी चाहिये।

बॉलीवुड में महिलाओं की क्या स्थिति है?

बॉलीवुड में महिलायें कमाल कर रही हैं। अब महिलाओं की स्थिति बदल गयी है। जब से ओटीटी आया है, तब से महिलाओं के नए-नए किरदार ढूंढे जाने लगे हैं। महिलाओं की इस समय अच्छी स्थिति है।

आप किरदार को निभाने से पहले क्या तैयारी करती हैं?

मैं स्क्रिप्ट पढ़ती हूं। मेरी स्क्रिप्ट रीडिंग बहुत अच्छी है। मैं स्क्रिप्ट पढ़ने के बाद, उसके हिसाब से अभिनय करने का प्रयास करती हूं। मैं वैसी ही किरदार अपने अंदर ढाल लेती हूं।

आपको किस तरह के किरदार निभाना पसंद हैं?

जब हम काम करते हैं, तब हम अपने हिसाब से किरदार नहीं चुन पाते हैं। ऐसे किरदार मुझे ज्यादा पसंद हैं जिनमें आप कुछ बेहतर कर पाएं।

मुख्य वजह क्या है कि धारावाहिकों को छोड़कर, आपने फिल्मों की तरफ रुख किया?

मुख्य वजह ये है कि उसमें बहुत ज्यादा समय देना पड़ता है। उसमें अपने आप के लिए समय नहीं मिलता। एक समय के बाद आपका शरीर भी जबाव देने लगता है। मेरे पास अब उतना समय भी नहीं है और पहले जैसी हिम्मत भी नहीं है।

एक्टिंग के फील्ड में आने से पहले कलाकार को किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

बहुत ज्यादा पढ़ना चाहिए। खासतौर से किताबों को पढ़ना चाहिए। दुनिया में क्या चल रहा है, उसे भी देखते रहना चाहिए। अगर हो सके तो थिएटर करना चाहिए।

वो मेरी ज़िंदगी के सबसे खूबसूरत तीन साल थे

करण ठाकुर मुंबई में पैदा हुए एक भारतीय कलाकार हैं। वह उन कलाकारों में से एक हैं जिन्हें कई मंचों पर कई चीजें करते हुए देखा गया है। वह एक अभिनेता, एंकर, वॉयस ओवर आर्टिस्ट और मॉडल हैं। करण ने शीर्ष राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडों के लिए 50 से अधिक विज्ञापन फिल्में की हैं। प्रस्तुत है हाल में करण ठाकुर से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

आपने किस स्कूल, कॉलेज से पढ़ाई की? विस्तार से बताएं।

मेरी पैदाइश मुंबई की है। शुरुआत में मेरी पढ़ाई चैम्बूर में हुई। उसके बाद मैं दिल्ली आ गया। दिल्ली से मैंने बारहवीं और ग्रेजुएशन किया। हरियाणा में ही मैंने गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय से रेडियो और टीवी पत्रकारिता में अपना परा-स्नातक किया।

मोतीलाल नेहरू कॉलेज की थिएटर सोसाइटी में आपका अनुभव कैसा था?

ग्रेजुएशन के दौरान वो मेरी ज़िंदगी के सबसे खूबसूरत तीन साल थे। कॉलेज की ड्रामैटिक सोसाइटी ने मेरी हॉबी को पैशन बना दिया। अपने दोस्तों के साथ नुक्कड़ नाटक करना, कभी पेड़ के नीचे बैठकर रिहर्सल करना और साथ डीटीसी बस में सफर करना ये सब यादगार था।

आपके लिए ज़ी न्यूज़ से बाहर निकलना कितना आसान था?

वहाँ से काम छोड़ना मेरे लिए बहुत आसान था क्योंकि वहाँ पर मैं जूनियर रिपोर्टर के तौर पर काम कर रहा था। इसी बीच मैंने थ्री इडियट मूवी देखी, जिसके बाद ये सब मेरे लिए आसान हो गया था।

आपको कितनी भाषाओं का ज्ञान है, आपके अनुसार एक कलाकार को कितनी भाषाएं सीखनी चाहिए?

मुझे इंग्लिश और हिन्दी दोनों भाषाएं अच्छे से आती हैं। एक कलाकार किसी रूप में जो भी सीख सकता है, उतना अच्छा है। नई भाषा सीखना भी इसी कड़ी का हिस्सा है। अभिनय में भाषा एक हथियार है। मैं भारत के लगभग सभी भाषाओं के लहजे में बात कर लेता हूं। मैंने अपने शो भाग्य-विधाता में भोजपुरी टोन में बात की, फिर एक शो में मराठी टोन थी, इसी तरह पंजाबी टोन और दक्षिण भारतीय टोन में मैंने काम किया है।

आपको पहला काम कैसे मिला, काम ढूंढने को लेकर आपका क्या संघर्ष रहा?

उस समय फोटो की हार्ड कॉपी के पीछे अपना नाम नंबर लिखकर कास्टिंग एजेंसी और प्रोडक्शन हाउस में देते थे, वहां से कई दिनों तक जवाब नहीं आता था। एक बार प्रोडक्शन हाउस को मेरी फोटो पसंद आ गई, उनके शो का दूसरा सीजन आने वाला था, उसके बाद ऑडिशन हुआ, लुक टेस्ट हुआ और मैं उनसे जुड़ा। यह सब कई बार ट्राई करने के बाद मौक़ा मिला था। जब पहला काम मिलता है तो संघर्ष काफी पीछे छूट जाता है।

आपके लिए 'अवरोध: द सीज विदिन' सीरीज में कैप्टन फारूक का किरदार निभाना कितना चुनौतीपूर्ण था?

चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि यह एक पाकिस्तानी आर्मी ऑफिसर का किरदार था। मैं अपनी निजी ज़िंदगी में थोड़ा चंचल हूँ। मेरी बॉडी मूवमेंट ज़्यादा होती है, लेकिन आर्मी के लोग बड़े सख़्त और अनुशासन वाले होते हैं। तो मैंने जीवन में अनुशासन सीखा, उर्दू बोलने का लहजा सीखा और पाकिस्तानी आर्मी ऑफ़िसर्स के इंटरव्यू देखे, जिससे उस किरदार के प्रति न्याय किया जा सके। यह मेरे लिए बहुत बड़ा अवसर था। मुझे बड़े अभिनेताओं के साथ काम करने का मौक़ा मिल रहा था। इसके लिए तैयारी ज़रूरी थी, वो की भी मैंने और लोगों को पसंद भी आया।

आप एंकर, मॉडल, वॉइस ओवर आर्टिस्ट और एक्टर हैं तो आप अपनी इतनी सारी खूबियों को मैनेज कैसे करते हैं?

मेरे लिए बहुत ही आसान है। जहां से लक्ष्मी आती है वहां मैं काम कर लेता हूं। जिससे मुझे लगता है कि काम और पैसा अच्छा मिल रहा है तो उस काम पर ध्यान केंद्रित कर लेता हूँ।

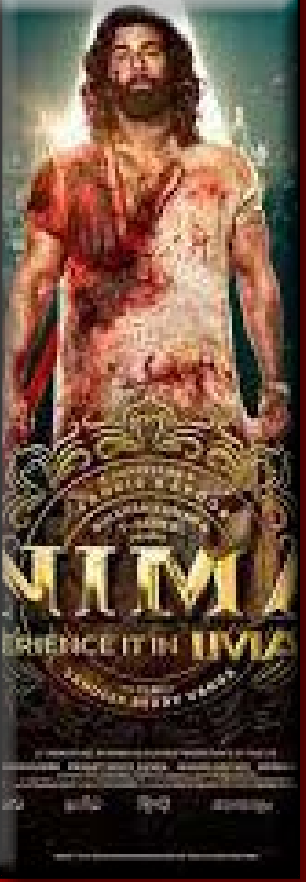

FilmFare Awards 2024 Winners list

67 TH FILMFARE AWARDS 2024

BEST ACTOR IN A LIADING ROLE ALIA BHAT
Rocky aur rani kii prem kahaani

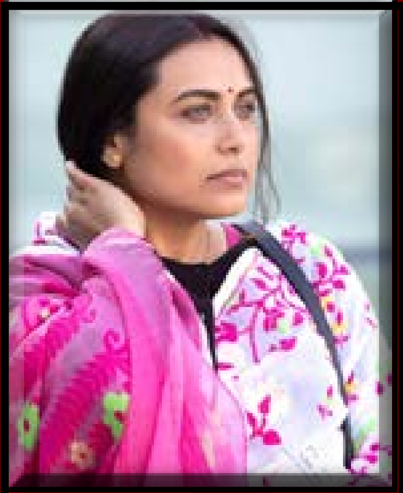

BEST ACTRESS (CRITICS)
RANI MUKERJI
Mrs. Chattejee Vs Norway

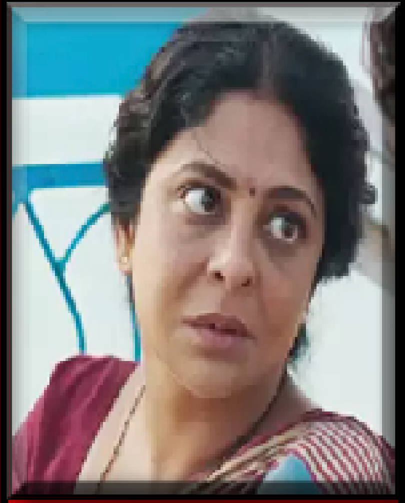

BEST ACTRESS (CRITICS)
SHEFALI SHAH
Three of Us

BEST DIRECTOR
VIDHU VINOD CHOPRA
12th Fail

BEST ACTOR (CRITICS)
VIKRANT MASSEY
12th Fail

LIFETIME ACHIEVE-MENT
DAVID DAWAN

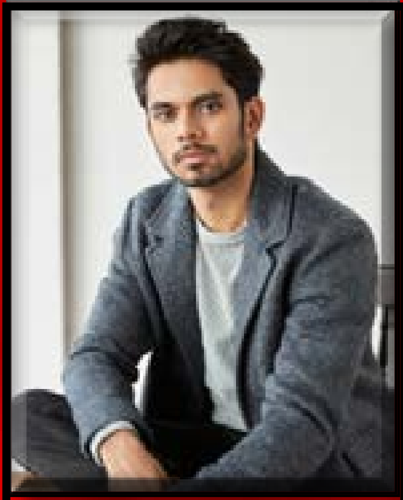

Best debut Actor
Aditya rawal
Faraaz

BEST ACTRESS SUPPORTING-ROLE (FEMALE)
SHABANA AZMI
Rocky aur rani kii prem kahaani

BEST ACTOR SUPPORTING ROLE (MALE)
VICKY KAUSHAL
Dunki

Cyli Khare

एफटीआईआई से पास आउट सिंगर, म्यूजिक कंपोजर, डायरेक्टर और एक्टर्स सयाली खरे मुंबई में अपना परचम लहरा रही हैं। प्रस्तुत है हाल में सयाली खरे से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

हर एक कलाकार की अपनी किस्मत होती है

आप सिंगर, म्यूजिक कंपोजर, डायेक्टर और एक्ट्रेस हैं, पूर्ण रूप से किस दिशा में जाना चाहती हैं?

मैं इन सब काम को अलग नहीं मानती हूं। मैं इनको एक ही कला के तीन रूप मानती हूं। जड़ से पौधा होता है, ठीक वैसे ही मेरे पास शुरूआत में शब्द आए तो मैंने लिखना शुरू किया। इसके बाद म्यूजिक आया, म्यूजिक और शब्दों से मिलकर गाना बन गया। इसके बाद परफॉर्म करने लगी। बाद में डांस करना भी सीख लिया। ऐसा बहुत कम होता है कि कोई कलाकार केवल एक ही काम करे, ज्यादातर कलाकार एक साथ कई काम करते हैं।

किसी गाने को रिकॉर्ड करने से पहले क्या-क्या तैयारियां करनी होती हैं?

गाना किस वजह से बन रहा है, ये देखना बहुत जरूरी है। ये ध्यान रखना पड़ता है कि उसकी आवाज कैसी है। डायरेक्टर के ऊपर भी होता है कि वह क्या चाहता है, हर गाने का अलग तरीका होता है।

गीतकार और संगीतकार के बीच का तालमेल कैसा होता है?

गीतकार और संगीतकार के बीच विश्वास का भाव होता है। मैं हमेशा कोशिश करती हूं कि उनको वक्त दे पाऊं, उनको समझ पाऊं। गीतकार और संगीतकार को समय लगता है एक-दूसरे को समझने के लिए।

आप किस गीतकार के साथ काम करना चाहती हैं?

ऐसे बहुत गीतकार हैं जिनके साथ मैं काम करना चाहती हूं। नेटफ्लिक्स पर मैंने स्वानंद किरकिरे सर के साथ काम किया है। उनके साथ काम करके मुझे बहुत अच्छा लगा और बहुत कुछ सीखने को भी मिला। मैं चाहती हूं कि मैं उनके द्वारा लिखे गाने कंपोज करूं, उनका लहजा मुझे बहुत पसंद है।

आपका पसंदीदा सिंगर कौन हैं?

मेरे पसंदीदा सिंगर कुमार सानू, सुनिधि चौहान आर सोनू निगम हैं।

आपने सृष्टि तावड़े के साथ काम किया है, उनके बारे में कोई अच्छी बात बताइए?

वो अभी युवा है, वो पढ़ती भी है। वो सीखना चाहती है। मुझे लगता है कि वो आगे चलकर बहुत अच्छा करेगी।

अपनी जर्नी के बारे में कुछ बताएं?

मैंने दूसरी कक्षा से ही कविताएं लिखना शुरू कर दी थी और मैं दसवीं तक कविताएं लिखती रही। मैं भरतनाट्यम करती थी। मुझे नेशनल स्कॉलर मिला। मैंने बारह तरह के नृत्य सीखे। मैंने नक्षत्र फाउंडेशन नाम से संस्था भी खोली। इसके बाद मैं एफटीआईआई आ गयी। अभी मैं वेब सीरीज और फिल्मों के लिए गाना गा रही हूं।

शुरुआत में सिंगर को काम मिलने की प्रक्रिया क्या होती है?

हर एक कलाकार की अपनी किस्मत होती है। मैं एफटीआईआई एक्टर बनने गयी थी, लेकिन मैं सिंगर बन गई। आज के दौर में इतने ज्यादा प्लेटफॉर्म आ गए हैं, तो नए व्यक्ति के लिए थोड़ा मुश्किल तो होता है। लेकिन अगर आपके अंदर टैलेंट है तो काम मिल ही जाता है।

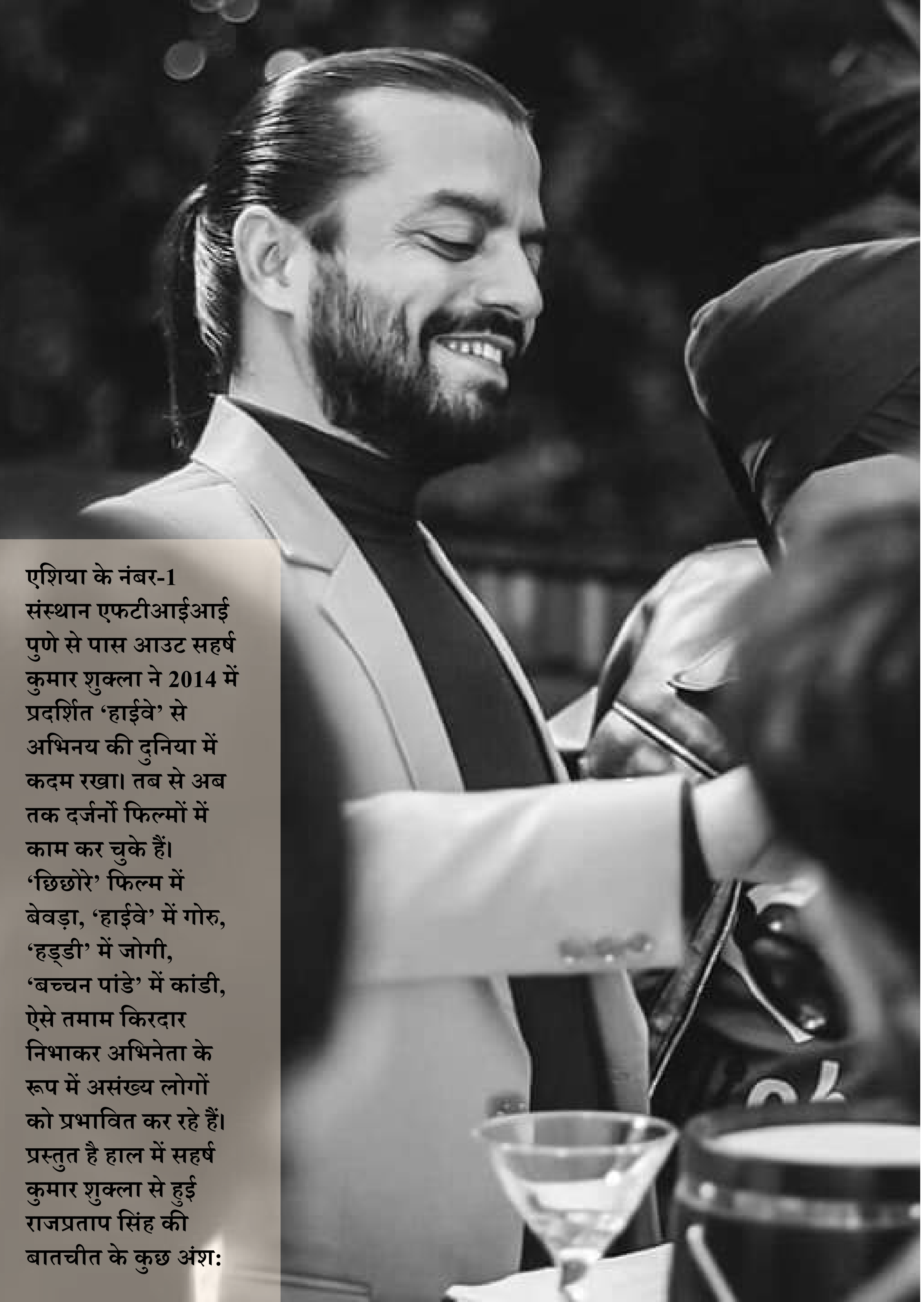

एशिया के नंबर-1 संस्थान एफटीआईआई पुणे से पास आउट सहर्ष कुमार शुक्ला ने 2014 में प्रदर्शित 'हाईवे' से अभिनय की दुनिया में कदम रखा। तब से अब तक दर्जनों फिल्मों में काम कर चुके हैं। 'छिछोरे' फिल्म में बेवड़ा, 'हाईवे' में गोरु, 'हड्डी' में जोगी, 'बच्चन पांडे' में कांडी, ऐसे तमाम किरदार निभाकर अभिनेता के रूप में असंख्य लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। प्रस्तुत है हाल में सहर्ष कुमार शुक्ला से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

ईश्वर से प्रार्थना करता हूं सभी माध्यमों का भविष्य उज्जवल हो

उत्तर प्रदेश के रायबरेली गांव ऐहार से महाराष्ट्र की चमचमाती मुंबई तक क्या बदलाव हुए?

गांव का कल्चर और माहौल, शहरों से बिल्कुल अलग होता है। मुंबई बिल्कुल जग-माहौल है, चाहे वो पॉपुलेशन के मामले में हो, विकास के मामले में हो, दिनचर्या, लाइफ स्टाइल, भोजन और पहनावा आदि बदलाव होते हैं। दोनों में बराबर मजा आता है।

आपने 10 वीं और 12 वीं तक नहीं सोचा था कि अभिनय की दुनिया में जाऊंगा, फिर अचानक बॉलीवुड की तरफ कैसे मन बना लिया?

घर में दादाजी से लेकर भतीजा तक सब पढ़े लिखे हैं। मैं पढ़ाई में ठीक-ठाक था। इंटरमीडिएट में सोचा सीपीएमटी कर डॉक्टर बन जाऊं और बी.ए. में सोचा कि आई.ए.एस. की तैयारी कर लूं। लेकिन वो बात नहीं बन पाई। मैं हर फील्ड के लोगों से बात करता था। जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, बैंक कर्मचारी इत्यादि। सब यही कहते थे मन नहीं लग रहा है। बस एजुकेशन के ढांचे की वजह से यह करियर अपना लिया है। बहुत कम लोगों ने बोला कि मन लग रहा है। सभी एक्सपर्ट यही कहते थे विषय वो चुनो जिसमें मन लगे। फिर फिल्मों में आकर्षण पैदा हुआ। मन में आया यार ये चीज बड़ी सुंदर है, इसमें करियर बन जाए।

आपने दिग्गज कलाकारों के साथ काम किया है, अब किस कलाकार के साथ काम करने की तमन्ना बाकी है?

हिंदुस्तान में बहुत सारे कलाकार हैं, जिनके साथ काम करना चाहता हूँ, लिस्ट बहुत लम्बी है।

इस युग में सोशल मीडिया पर हर कोई लोकप्रिय हो रहा है, कलाकारों को अपनी पहचान बनाए रखनें में कितनी चुनौतियां आ रही हैं?

मेरे जो सीनियर एक्टर हैं, उन्होंने मुझे सलाह दी। सोशल मीडिया का दौर है, कई लोग शॉर्ट वीडियो बना कर फेमस हो रहे हैं। कलाकार के नाते जो भी काम मिले, ईमानदारी से करते रहो। क्योंकि इंड्रस्टी में काम नहीं करोगे तो लोग भूलने लगते हैं। मुझे लगता है उनकी बात सही है। क्योंकि हम उस तरह वीडियो नहीं बना सकते हैं। न हमारा नेचर है, न टैलेंट है, न स्वभाव है। तो मुझे अभिनय ही करना है। जो भी काम मिले शिद्दत से करता रहूँगा।

आने वाले समय में भारत में ओटीटी और थिएटर का क्या भविष्य होगा?

सिर्फ सिनेमा ही नहीं, ओटीटी, टेलीविजन और रंगमंच सब तरक्की करें। तभी लोगों की रोजी-रोटी चलेगी। मैं सारे माध्यम की बात कर रहा हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि सभी माध्यमों का भविष्य उज्जवल हो।

आपके जीवन की टर्निंग पॉइंट फिल्म कौन सी रही, उसके बाद जीवन में क्या-क्या बदलाव हुए?

टर्निंग पॉइंट फिल्म "हाईवे" रही है। डोर टू डोर भटकने का दौर कम हुआ। घर बैठे ऑडिशन आने लगे। हाईवे के बाद स्थिति ठीक हुई। वर्सोवा विलेज में रूम लेकर रहने लगा। जिससे पढ़ भी सकूं और खुद पर काम भी कर सकूं। जो भीड़ में संभव नहीं है।

फिल्म लीक होने कैसे बचा जाए?

हाँ बिलकुल, फिल्मों का लीक होना रुकना चाहिए। इसके लिए सेंसर बोर्ड और सरकार को ठोस कार्यवाही करनी चाहिए। फिल्म बड़ी मेहनत से बनती है। बड़ी रिसर्च लगती है। प्रोड्यूसर का पैसा लगता है। बड़ा नुकसान होता हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए।

कलाकार बहुत इमोशनल होता है

कुमार सौरभ का जन्म हरियाणा में हुआ। मध्यप्रदेश ड्रामा स्कूल से एक्टिंग का कोर्स कर किस्मत आजमाने मुंबई गए। 'लाल रंग' से शुरुआत कर 'शमशेरा', 'शिक्षा मंडल', 'बारात कंपनी', 'यूटी69' और 'महारानी' वेब सीरिज में अभिनय कर अपने गाँव का नाम रोशन किया। प्रस्तुत है हाल में कुमार सौरभ से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

आपने कब सोचा था कि आप एक्टर बनेंगे?

यह तो मैंने बचपन में ही सोच लिया था जब मैं लगभग 7–8 साल का था। उस वक्त पापा बोलते थे कि तुम्हें एनएसडी में जाना है। मैं कहता था एनएसडी क्या है। पापा बताते थे नेशनल स्कूल आफ ड्रामा में एक्टिंग की पढ़ाई होती है और फिल्म में काम करने के लिए यहां से ट्रेनिंग लेना पड़ेगा। यह पापा की मेरे लिए बचपन से ही चाहत थी।

पिताजी के कहने पर एक्टर बने या अपनी खुद की ख्वाहिश थी?

खुद की ख्वाहिश थी। अभिनय तो हर व्यक्ति करना चाहता है, विराट कोहली को भी अभिनय करना अच्छा लगता है। डॉक्टर को भी एक्टिंग करनी है। अभिनय सबको अच्छा लगता है। खुद की आत्मसंतुष्टि के लिए भी अभिनय कर रहा हूं।

बॉलीवुड में नेक्स्ट प्रोजेक्ट में किस कलाकार के साथ काम करना चाहते हैं?

शाहरुख सर और आमिर खान सर के साथ।

मुंबई पहुंचने के बाद पहला रोल कितने स्ट्रगल के बाद मिला?

रोल तो मुझे 15 दिन के बाद ही मिल गया था। क्राइम पेट्रोल में छोटा सा कैरेक्टर था। वहां से मुझे कॉन्फिडेंस आया और एक्टर्स ने तारीफ की। 1 महीने के अंदर मुझे एक सीरियल में काम मिला। सीरियल स्टार प्लस पर प्रसारित होता था। सीरियल के मेकर्स ने कहा कि 1 महीने में 25 दिन काम होगा लेकिन दो या तीन दिन काम होता था। वह दौर बहुत मुश्किल भरा था। बीच में काफी उतार-चढ़ाव देखे लेकिन यह जीवन में चलता रहता है तभी तो काम करने में मजा आता है।

आपने एक इंटरव्यू में कहा था कि मां के अलावा कोई प्यार नहीं करता था तो एक्टर बनने के बाद कुछ बदलाव हुए?

एक्टर बनने के बाद प्यार सिर्फ समाज से मिला। मैंने एक व्यक्ति को दो तरह से देखा है। 14 तारीख को वह कुछ और है। 15 तारीख को मेरे परफॉर्मेंस करने के बाद वह कुछ और है। सब कुछ बदल गया, प्यार करना और आदर करना। तो उसने मुझे बहुत पुश किया। मुझे प्यार मिल रहा है वह मुझे बहुत आत्म संतुष्टि देता है। आपने मेरा इंटरव्यू लिया, तो यह मेरे लिए सच्चा प्यार है। बहुत खुशी देता है। माँ तो नहीं रही। लेकिन मेरे दादा-दादी जी वर्ल्ड के बेस्ट दादा दादी जी थे।

सेल्फी लेते वक्त दोस्त ग्रुप से निकाल देते थे, वह जीवन कैसे व्यतीत हुआ?

मेरे लिए कुछ नया नहीं था। जैसे कि दलित समाज के व्यक्ति को मारते हैं तब वह उसके लिए आम हो जाता है। गाली सुनना, मारपीट का भी जवाब नहीं देना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। दिनचर्या ऐसे ही बीत रहा था। मैं समझ रहा था ठीक है, अभी कर लो। लेकिन बाद में आप मुझसे प्यार करने के लिए सोचेंगे।

मुंबई में हाइट को लेकर किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा?

हर जगह ऐसे लोग होते हैं। जो आपको नेगेटिव करते हैं कुछ पॉजिटिव करते हैं। शुरू में कोई मुझे देखकर बोलता ही नहीं था कि मैं एक्टर हूं। लेकिन जब एक्टिंग करता हूं, ऑडिशन देता हूं। तब बोलते थे कि तुम बहुत बेहतरीन कलाकार हो। यहां पर तो हर तरह के लड़कों का काम है मोटे हो, पतले हो या छोटे हो। हर कैरेक्टर चाहिए यहां पर। इसको लेकर कहीं ना कहीं मेरे लिए प्लस पॉइंट है। यह गॉड गिफ्टेड है आई थिंक सो।

ज्यादातर कलाकार एनएसडी और एफटीआईआई से पास आउट होकर आते हैं, आपने मध्य प्रदेश स्कूल ऑफ ड्रामा ही क्यों चुना?

उस वक्त मैं दिल्ली में थिएटर करता था और मेरा लक्ष्य था एनएसडी में पढ़ना। सोचा 1 साल तक थिएटर करूंगा और फिर एनएसडी जॉइन करूंगा। मेरे दोस्तों ने कहा कि तू मध्य प्रदेश स्कूल ऑफ ड्रामा में अप्लाई कर दे क्योंकि वहां पर भी एनएसडी की फैकल्टी है और रहना खाना मुफ्त है।

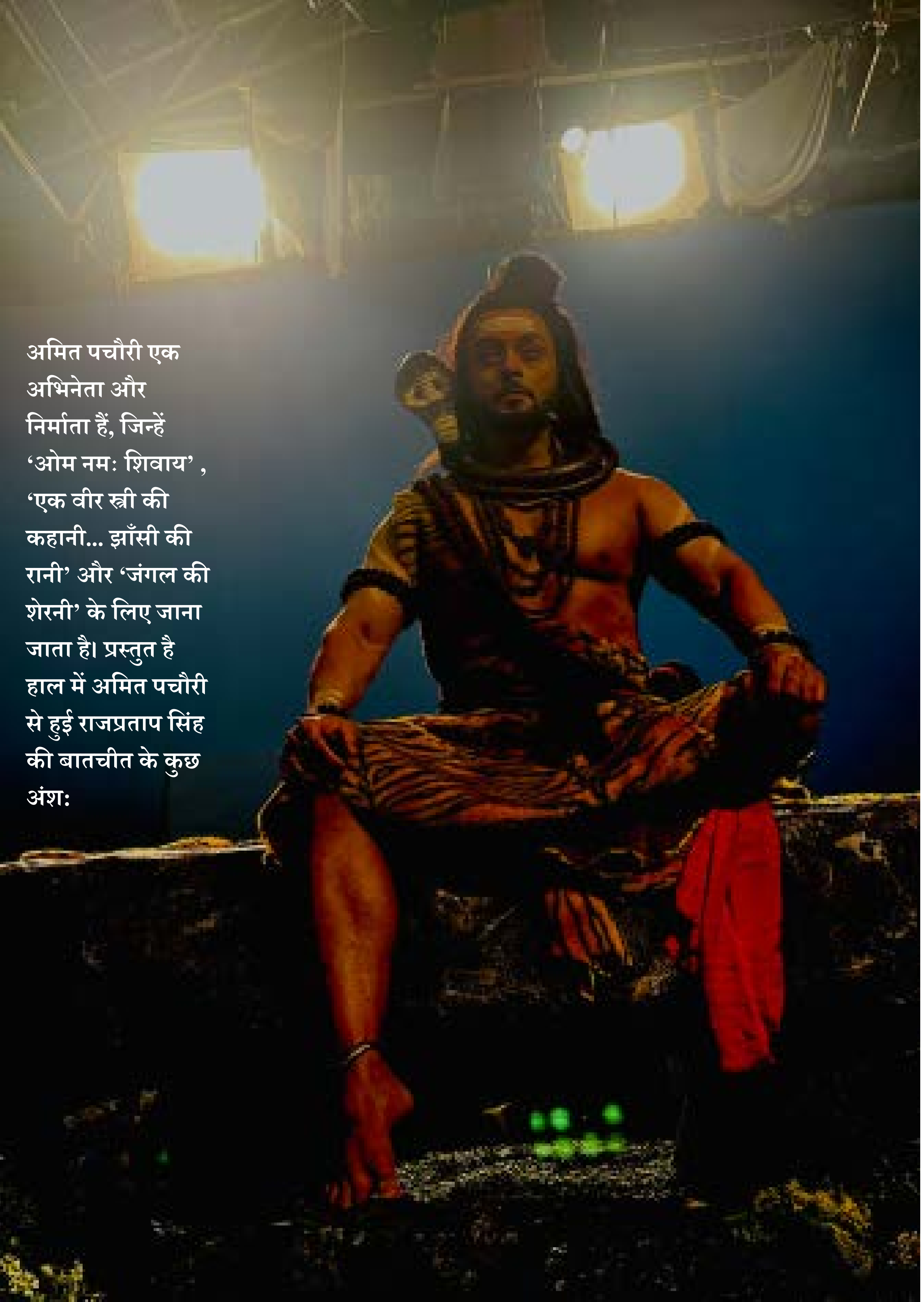

अमित पचौरी एक अभिनेता और निर्माता हैं, जिन्हें 'ओम नमः शिवाय' , 'एक वीर स्त्री की कहानी... झाँसी की रानी' और 'जंगल की शेरनी' के लिए जाना जाता है। प्रस्तुत है हाल में अमित पचौरी से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

भगवान की कृपा से मेरे पास सब कुछ है

आपकी पसंदीदा जगह कौन-सी है, जहां आप बार-बार घूमना चाहते हैं?

मेरी सबसे पसंदीदा जगह कश्मीर है। मैं समझता हूं भारत का ताज "कश्मीर" है। कश्मीर का खाना भी बहुत अच्छा है।

आपके इंस्टाग्राम पर हर दूसरी पोस्ट बॉडी बनाने से संबंधित है, आप एक दिन में कितने घंटे एक्सरसाइज करते हैं और डाइट प्लान क्या है?

मैं हफ्ते के छह दिन वर्कआउट करता हूं। मेरा ये मानना है कि हमारा शरीर पूजा घर है, जितनी इसकी पूजा करेंगे उतने ही ज्यादा फिट रहेंगे। मैं स्पोर्टस भी खेलता हूं। मैं दिन में प्रोटीन और फाइबर बहुत ज्यादा खाता हूं।

आप भगवान शिव और विष्णु का किरदार निभाने से पहले क्या तैयारी करते थे?

मैं जब भी भगवान का किरदार निभाता हूं, तब मैं मांस और गलत भाषा छोड़ देता हूं।

आप इंट्रस्टी में कब से काम कर रहे हैं, अपनी जर्नी के बारे में कुछ बताएं?

मैं बीस साल से काम कर रहा हूं। मैंने जिंदगी में ज्यादा संघर्ष नहीं किया। मुझे आते ही काम मिलना शुरू हो गया। मेरे पास भगवान की कृपा से सब कुछ है और मैं बहुत खुश हूं।

लॉकडाउन में समय कैसे व्यतीत हुआ?

मेरे पास दो कारें थीं। मैंने अपनी कारों को एंबुलेंस में लगा दिया था। मेरा लॉकडाउन का समय घर पर ही बीता। मुझे ज्यादा समस्या नहीं हुई और जितनी मदद कर सकता था, मैंने की।

लोकसभा चुनाव में किस पार्टी को सपोर्ट करेंगे?

मैं तो एक ही पार्टी को सपोर्ट करता हूं वो है भाजपा। अगर मैं कहूं कि मैं किसी का फैन हूं तो वो हैं श्री मोदी जी, जो मेरे देश को तरक्की दिला रहे हैं, वो मेरे लिए सबसे बड़े हीरो हैं। मोदी जी सबसे बड़े सनातनी हैं। वे कट्टर हिंदू हैं, लेकिन सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। वे हर समय हिन्दुओं के बारे में सोचते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महाकालेश्वर है। उन्होंने देश के कई मंदिरों का नक्शा बदल दिया है। पूरी दुनिया उनके आगे नतमस्तक है।

प्रोड्यूसर विघ्नहर्ता शोर्ट फिल्म बनाने का क्या मोटिव था?

बतौर प्रोड्यूसर, ये मेरा पहला प्रोजेक्ट था। भगवान गणेश मेरे दिल के करीब रहते हैं। इस शॉर्ट फिल्म को पूरे भारत की जनता को देखनी चाहिए। मैंने हॉटस्टार को शॉर्ट फिल्म विघ्नहर्ता फ्री में दिया था।

आई थिंक कल्चर की बाउंड्रीज़ नही होनी चाहिए

केसरी 2019 की सबसे सफल फिल्मों में से एक थी। लंबी-चौड़ी स्टारकास्ट वाली इस फिल्म में एक ऐसा भी एक्टर था, जिसके बारे में जानकारी बहुत कम लोगों को होगी। वह एक्टर कोई और नहीं "मुज़म्मिल भवानी" हैं जो फिल्म में छिपकर बंदूक से निशाना लगाते हैं। मुज़म्मिल ने 'बजरंगी भाईजान', 'हैदर', 'पदमावत' और 'जॉली एलएलबी 2' फिल्म में अभिनय किया है। जॉन अब्राहम की अगली फीचर फिल्म "द डिप्लोमैट" में एक किरदार निभा रहे हैं। एनएसडी से पढ़ाई कर, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में प्रोग्राम डायरेक्टर हैं। प्रस्तुत है हाल में मुज़म्मिल भवानी से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

आप अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में प्रोग्राम डायरेक्टर हैं, इसके बारे में कुछ बतायें?

इस यूनिवर्सिटी की एक लेग़सी और हिस्ट्री है। ये अपने आप में एक अलग दुनिया है। जब आप इतने बड़ी यूनिवर्सिटी का पार्ट बन जाते हैं तो स्वयं पर गर्व महसूस होता है और मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता।

AMU में प्रोग्राम डायरेक्टर के पद पर आपकी जॉइनिंग कैसे हुई?

मुझे एक फ्रेंड के जरिए पता चला। जिस शख्स ने AMU के लिए मेरा आवेदन किया। उनसे आज तक मुलाकात नहीं हुई है। जिसने मेरा फॉर्म भरा था उन्होंने मेरे NSD के जूनियर को फोन किया और जॉब के बारे में बताया। मेरे जूनियर ने मेरा रेफरेंस दिया। इस पोस्ट के लिए NSD या FTII पास आउट चाहिए था। उन्होंने मुझे जब फ़ोन किया तब मैं एयरपोर्ट पर था। फ़ोन पर उन्होंने कहा – मुज़म्मिल AMU में पोस्ट निकली हैं भरोगे। कश्मीर में AMU नाम बहुत चर्चित है, लेकिन मैंने लास्ट डेट पूछकर छोड़ दिया फॉर्म फिल नहीं किया। पांच दिन बाद फिर उनका फ़ोन आया। उन्होंने मेरे डॉक्यूमेंट्स मांगे और कुछ समय के बाद AMU में इंटरव्यू देने चला गया। मज़े से इंटरव्यू दिया। उसके बाद 4-5 पेपर और वाइवा दिया और मुंबई चला गया। कुछ समय बाद मेरे पास फ़ोन आया कि आपकी जॉब लग गई है। मैं हैरान था फिर सीनियर से बातचीत कर AMU जॉइन कर लिया।

आपने असिस्टेंट डायरेक्टर, एक्टर और प्ले बैक सिंगर का भी कार्य किया है, आप किस दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं?

मैंने 7 साल की उम्र में ही एक्टिंग में करियर शुरू कर दिया। हमारे घर पर थियेटर का माहौल था। मेरे चाचा एनएसडी से पास आउट हैं, उन्होंने कहा प्ले में काम करोगे, तब उनके साथ काम किया। शिमला में शो हुआ। जूरी ने मुझे प्रोत्साहित किया। उसके बाद लगातार थियेटर से जुड़ा रहा साथ में एनएसडी से पढ़ाई पूरी की। एक दिन मुझे विशाल सर की ऑफिस से फ़ोन आया उन्होंने कहा फिल्म "हैदर" में अस्सिटेंट डायरेक्टर का काम करोगे। यह मेरे लिए बहुत ख़ुशी की बात थी। मैंने उनको असिस्ट किया। फिल्म में विशाल सर ने मुझे एक छोटा रोल दिया, उसे पूरी शिद्दत से निभाया। फिल्म में एक गाना था, सर को उसमें कश्मीरी फ्लेवर चाहिए था। सर के कहने पर चाचा, दोस्त और मैंने मिलकर गाना गाया और रही बात इस दिशा में आगे बढ़ने की तो फिल्म में काम मिलता रहेगा तो एक्टिंग करूँगा। लेकिन मुझे थियेटर प्ले डायरेक्ट करने में बहुत मजा आता है।

आपने फिल्म केसरी में स्नाइपर वाले सीन को यादगार बना दिया, उस सीन के लिए क्या तैयारी की थी?

इसका क्रेडिट डायेक्टर अनुराग सिंह को जाता है। शूट से पहले अक्षय कुमार को छोड़कर सभी कलाकारों की मुंबई में वर्कशॉप हुई। वहां पर ट्रेनिंग और रीडिंग सेशन चलता था। मैं भी अच्छे से पार्टिसिपेट करता था। जब हम रीडिंग करते थे, तब मेरी एक या आधी लाइन थी। डायरेक्शन टीम ने बताया एक स्नाइपर आएगा, गोली चला के चला जाएगा। मुझे अन्दर से लगा कहाँ आ गया इसमें मेरे लिए कुछ भी नहीं है। फिर लगा सर ने बिना काम के नहीं बुलाया होगा। अनुराग सर हर अगले दिन के लिए टास्क देते थे। करेक्टर डेवलप और लुक डेवलप करना सर के साथ डिस्कशन होता था। सर इनपुट देते थे। सीन शूट भी नहीं हुआ था तब मैंने इंप्रोवाइजेशन किया और सर को बहुत पसंद आया। सीन के लिए नेल पेंट और मेंहदी लगाई थी। शुरू में मुझे अजीब लग रहा था, लेकिन फिल्म में ये वर्क कर गई और ऑडियंस ने इसकी प्रशंसा भी की।

पाकिस्तानी कलाकारों पर से भारत में प्रतिबंध हटा दिया गया है, इसके बारे में आपकी क्या राय है?

आई थिंक कल्चर की बाउंड्रीज़ नहीं होनी चाहिए। इंडियन एक्टर भी हॉलीवुड में काम करते हैं। लेकिन इसके बारे में सरकार और एडवाइजर, हम से बेहतर जानते हैं। हम उनको सलाह नहीं दे सकते। उनको जो सही लगेगा, हमारे और देश के हित में होगा वही करेंगे। वो हमसे से बेहतर सोचेंगे

Appreciation To The Creation

Dadasaheb Phalke International Film Festival Awards 2024

BEST FILM

JAWAN

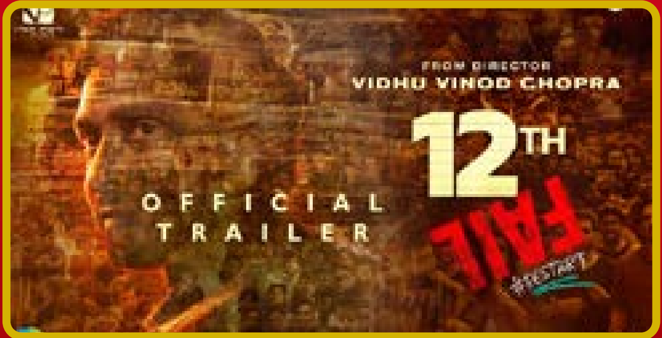

CRITICS BEST FILM

12th Fail

BEST SHORT FILM

Good Morning

BEST INTERNATIONAL FEATURE FILM

OPPENHEIMER

BEST ACTOR

Shahrukh khan (jawaan film)

BEST ACTOR IN NAGATIVE ROLE

Bobby deol (Animal movie)

BEST ACTOR (CRITICS)

Vicky Kaushal (Sam Bahadur)

BEST CINEMATOGRAPHER

(GNANA SHEKHAR V.S)IB71

BEST CRITICS DIRECTOR

ATLEE (JAWAN)

BEST DIRECTOR

Sandeep Reddy vanga (Animal movie)

BEST ACTRESS

RANI MUKHARJI (MRS. CHATTERJEE VS NORWAY)

BEST ACTREES (CRITICS)

KAREENA KAPOOR (JAANE JAAN)

एक्टर टॉम हेंग्स के साथ काम करना चाहती हूं

रक्षा कुमावत 'गुगली गम है' , 'सोनू ब्यूटी पार्लर' और 'लॉस्ट एंड फाउंड इन सिंगापुर' के लिए जाना जाती हैं। रक्षा कुमावत भारत के मशहूर यूट्यूबर कैरी मिनाटी की वीडियो में बेहतरीन अभिनय किया है। प्रस्तुत है हाल में रक्षा कुमावत से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

कैरी मिनाटी के साथ काम करके आपको कैसा लगा?

कैरी मिनाटी के साथ काम करके मुझे बहुत अच्छा लगा। वे अपने काम के प्रति बहुत ही लगनशील और मेहनती हैं। कैरी को कॉन्टेंट बनाने के सारे तरीके पता हैं।

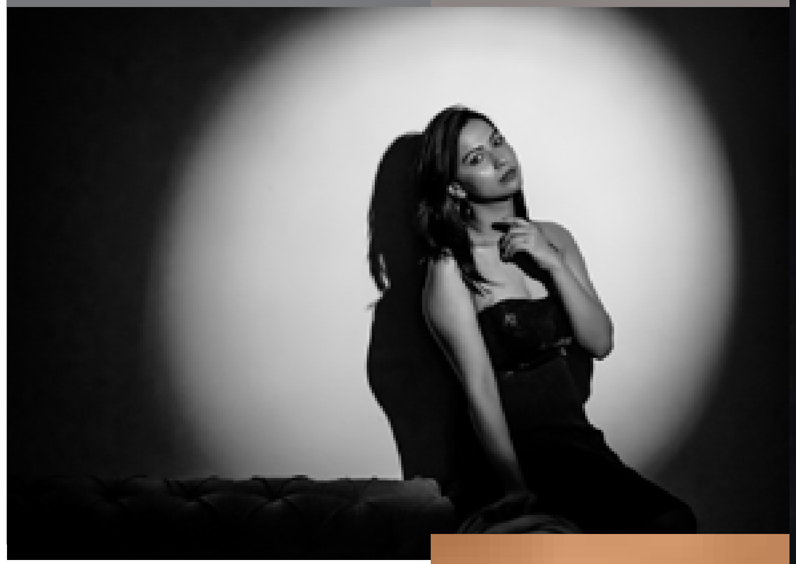

बॉलीवुड में पहली बार काम कैसे मिला?

मैं 2019 में मुंबई आई थी और आते ही मैंने टीवी के ऑडिशन दी। मैं प्रोडेक्शन हाउस के सोशल मीडिया ग्रुप में जुड़ी हुई थी। ग्रुप में मैसेज आ जाते थे कि कहां पर ऑडिशन चल रहा है। मुझे यहां पर एक हॉरर शो में एक महीने में काम मिल गया। मैं इस शो में मुख्य किरदार की बहन बनी थी। इसके बाद ऑडिशन देती गई और लोग जानने भी लगे, फिर काम मिलने लगा।

आपकी शुरूआती शिक्षा कहां से हुई?

मेरे पिताजी नेवी में थे, जिस वजह से मेरी पढ़ाई अलग-अलग जगह से हुई है। आठवीं से बारहवीं की पढ़ाई नेवी चिल्ड्रन स्कूल कोच्चि से हुई है। मैंने स्नातक की पढ़ाई आईटी से की है। एक साल के गैप के बाद, मैंने एमबीए की पढ़ाई एसआईएमएस से पूरी की।

सोशल मीडिया का दौर है, लोग यूट्यूब के जरिए भी लोकप्रिय हो रहे हैं, इसके बारे में क्या सोचती हैं आप?

यूट्यूब का जमाना तो है लेकिन जिनके पास ऑरिजनल कॉन्टेंट है, वो लम्बी रेस के घोड़े हैं। अगर आपके पास ऑरिजनल कॉन्टेंट की कमी है, तो आप लम्बी रेस के घोड़े नही हैं। आजकल इतने ज्यादा प्लेटफॉर्म आ गये हैं। आप टिकटॉक वाले वीडियो से फेमस तो हो जायेंगे, लेकिन विश्वसनीयता कहां से लायेंगे। जो ऑडियंस को कॉन्टेंट चाहिये वो कहां से लायेंगे।

आप अपनी फिटनेस को कैसे मैनेज करती हैं?

मुझे डांस ज्यादा पसंद है। मैं जिम वगैरह नहीं जाती हूं। मैं डांस के फॉर्म में एक्सरसाइज करना पसंद करती हूं। मैं फिटनेस के लिए डांस क्लास जाना पसंद करती हूं।

आपकी फर्स्ट शॉर्ट फिल्म "सुनो डार्लिंग" का कोई किस्सा बतायें?

दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के दो छात्र थे, जिन्होंने ये फिल्म लिखी थी। इनका सोशल मीडिया पर तीन पत्थर नाम से पेज था। इन छात्रों को लिखने का बहुत शौक था। इस फिल्म को हमने एक रात में द्वारिका दिल्ली के एक पार्लर में शूट किया है।

आप किस एक्टर के साथ काम करना चाहती हैं?

मैं अमेरिकी फिल्म मेकर और एक्टर टॉम हेंग्स के साथ काम करना चाहती हूं।

नए कलाकार अपनी लिंक कैसे बनायें?

यहां पर बहुत से ऑडिसन ग्रुप हैं। सबसे पहले अपना पोर्टफोलियो बनाओ फिर किसी ऑडिसन ग्रुप का हिस्सा बन जाओ। इससे आपको पता चल जाता है कि ऑडिसन कहां हो रहे हैं। इसके बाद आपकी मेहनत, आपका टैलेंट आपको आगे ले जायेगा।

देवास दीक्षित भारतीय सहायक कलाकार हैं, जो मुख्यत: बॉलीवुड फिल्मों में नज़र आते हैं। देवास ने 'छपाक' , 'क्लास ऑफ 83' और 'डॉक्टर जी' जैसी फिल्मों में अभिनय कर पहचान बनाई। प्रस्तुत है हाल में देवास दीक्षित से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

कोई बात आपके लिए विवादित हो सकती है मेरे लिए नहीं

भारतीय सिनेमा में एफटीआईआई का क्या महत्त्व है?

एफटीआईआई की जगह 1920 में प्रभात स्टूडियो हुआ करता था। देश की आज़ादी के बाद प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने 1960 में प्रभात स्टूडियो को भारतीय फ़िल्म संस्थान बना दिया। फ़िल्म से जुड़े कोर्स में खर्च बहुत आता है सरकारी संस्थान बनने से फ़ीस कम हुई और कम संसाधन रखने वाले आम लोग भी इसमें ट्रेनिंग के लिए आने लगे। आज काफ़ी तादाद में लोग किसी भी फ़िल्म के सेट पर आपको एफटीआईआई से पढ़े मिल जाएँगे।

आप अपना आदर्श कलाकार किसे मानते हैं?

आदर्श जैसी कोई चीज नहीं होती और होनी भी नहीं चाहिए। बस कुछ पसंदीदा कलाकार होते हैं जो आपके दिल को छू जाते हैं और ये लोग बदलते रहते हैं। जैसे जब मैं छोटा था तो मुझे शाहरुख ख़ान बहुत अच्छे लगते थे फिर जब मैं ग्रेजुएशन में आया तो मेरा मानसिक विकास हुआ। उसके बाद मेरे पसंदीदा कलाकार नसीरुद्दीन शाह और ओम पुरी हो गये। इस समय मेरे पसंदीदा एक्टर की कड़ी में इरफ़ान सबसे ऊपर हैं।

क्या फ़िल्मों में विवादित सीन जानबूझकर डाले जाते हैं?

विवादित सीन क्या होता है, कोई बात आपके लिए विवादित हो सकती है और मेरे लिए नहीं। हो सकता है कुछ लोगों को हमारा रात में बात करना आहत लगे, लेकिन आप जानते हैं कि ऐसा नहीं है। विवाद को समझना ज़रूरी है, क्या कोई बात शत प्रतिशत लोगों को आहत कर रही है, नहीं ऐसा नहीं होता है, क्या पहले किसी अभिनेत्री ने भगवा रंग के कपड़े नहीं पहने थे। ये सब राजनीतिक कारणों से होता है। कुछ फ़िल्म बनाने वाले इसका फ़ायदा उठाते हैं, लेकिन ज़्यादातर सीन जान बूझकर नहीं डाले जाते हैं।

छपाक फ़िल्म आपके लिए कैसी रही? उससे जुड़े कुछ किस्से जो आप बताना चाहें।

छपाक फ़िल्म के समय, मुंबई शहर मेरे लिए नया था। मेरे लिए छपाक फ़िल्म बहुत अच्छी रही, क्योंकि मुझे मेघना गुलज़ार के साथ काम करने का मौक़ा मिला। जब मैं एफटीआईआई में पढ़ रहा था तब मैंने उनकी फ़िल्म तलवार देखी थी। उसके चार साल बाद मुझे मेघना गुलजार के साथ काम करने का मौक़ा मिला। छपाक फ़िल्म एसिड अटैक जैसे मुद्दे पर बनी है, जिन पर कम बात होती हैं। इस दौरान मैं एसिड अटैक से बचने वाले लोगों से मिला, एक परिवार तो ऐसा है जिससे मेरी दोस्ती आज तक है।

फ़िल्में किसी आम व्यक्ति के जीवन पर किस हद तक अपना प्रभाव छोड़ती हैं?

सिनेमा हमेशा से समाज का आईना रहा है। आप 1960 के दशक की फ़िल्में देखें तो आपको पता चलेगा कि उन फ़िल्मों में विलेन ज़मींदार होता था। इसी तरह 80 के दशक की फ़िल्मों में स्मगलर, उसके बाद आतंकवादी विलेन के रूप में आने लगे और उसके बाद नेता। आपका समाज जिस स्थितियों से गुजर रहा होता है, उसी तरह की फ़िल्म बनती हैं। आम आदमी के जीवन पर प्रभाव पड़ता ही है, जो आदमी थोड़ा भी संवेदनशील है उस पर प्रभाव पड़ता है।

आपके जीवन में कभी ऐसा समय आया है जब आपको लगा हो कि आपसे अभिनय के क्षेत्र में नहीं हो पा रहा है?

मेरे जीवन में कभी ऐसा समय नहीं आया है, लेकिन मैं निराश ज़रूर हुआ हूं कि मुझे अपने मन के मुताबिक काम नहीं मिल रहा है।

आप ज़िंदगी में किस तरह का किरदार निभाना चाहते हैं?

मैं हीरो, कॉमेडियन और विलेन सब कुछ बनना चाहता हूं। मैं सारे किरदार निभाना चाहता हूं, जिस तरह से ओमपुरी साहब एक्टिंग किया करते थे।

एफटीआईआई पुणे से पास आउट रेश लांबा अभिनेता के रूप में असंख्य लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। 2014 में प्रदर्शित "सिटी लाइट्स" से अभिनय की दुनिया में कदम रखा, तब से अब तक दर्जनो फिल्मों में काम कर चुके हैं। प्रस्तुत है हाल में रेश लांबा से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

कन्नूर स्क्वाड का क्या एक्सपीरियंस रहा?

यह मेरी पहली मलयालम फिल्म है। किसी भी दूसरी भाषा में काम करते हैं तो एक्साइटमेंट और नर्वसनेस रहती है। हालंकि, मेरे मलयालम में ज्यादा डायलॉग नहीं थे। नए सेटअप, नए लोगों के साथ काम करना, नई भाषा में काम करना, जहाँ इंस्ट्रक्शन भी नपे-तुले मिलते हैं क्योंकि हिंदी उनकी भाषा नहीं है, सेट पर सब लोग मलयालम में बात करते थे वो समझ में भी नहीं आती थी, उसमें काम करना हमें थोड़ा और ज्यादा फोकस रहने की जरुरत होती थी, वो हमने किया। टीम में बहुत ही प्यारे लोग थे। उनके साथ काम करके मुझे मजा आया।

आपने थिएटर, फिल्म और वेब सीरिज आदि में अभिनय किया है, इन सब में किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?

टेक्निकल बातों का ध्यान रखना पड़ता है। बाकी एक्टिंग में खास डिफरेंस नहीं है। कोई कैरेक्टर फिल्म, स्टेज या वेब सीरिज में, पूरी शिद्दत के साथ करना पड़ता है। स्टेज में वहीं बैठी हुई लाइव ऑडियंस के लिए काम करते हैं। आपकी आवाज सबको सुनाई और दिखाई दे। फिल्म और वेब सीरिज के लिए हमें लाइट और मार्किंग कैमरा को कैप्चर करनी पड़ती है, ऑडियंस रिमोट के बटन के पास ही होती है।

ये मदारियों का देश है यहां खिलौने नहीं खेल बिकते हैं

आपका किसी खास कलाकार के साथ काम करने का मन है?

पहले मुझे ऐसा लगता था मुझे उनके साथ काम करना है। अब सच में कोई तमन्ना नहीं है कि ये एक्टर हो या ये स्टार हो। पहले एक टाइम पर मुझे इरफान साहब के साथ काम करने का बड़ा मन था लेकिन वो नहीं रहे। अभी जिस भी कलाकार के साथ काम किया सब ब्रिलियंट थे, क्योंकि अपना काम तो काम करना है। सामने कोई भी कलाकार हो, उससे कोई खास डिफरेंस नहीं पड़ता है। लेकिन मुझे के. के. मेनन के साथ काम करने की बड़ी इच्छा है।

ये मदारियों का देश है यह कविता क्या सोचकर और किसके लिए लिखी थी?

कुश्ती महिला खिलाडियों ने एक व्यक्ति पर गंभीर आरोप लगाये और उस व्यक्ति के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिश करने के बाद उसे राजनीतिक रूप दे दिया गया। हर फील्ड में मुख्य मुद्दा पर ध्यान न देकर और बाकी चीजों पर फोकस हो गया है। खेल हो या फिर फिल्ड, मुझे व्यक्तिगत तौर पर ये लगता है जहाँ काम करने जा रहे हो, वहां काम करो और वहां से वापस आ जाओ। जो बीच की पॉलिटिक्स है इससे हर किसी को डील करना पड़ता है। वो संदर्भ में मैंने लिखा था। मदारियों का देश है, यहाँ खिलौने नहीं, खेल बिकते है।

आप एक्टर की जिन्दगी को दो लाइन में कैसे वर्णन करेंगे?

कलाकार की जिन्दगी में उत्साह और रोमांच होना चाहिए। कलाकार खोजी है, जो नई-नई चीजें खोजता रहता है। इधर-उधर से ऑब्जरवेशन कर एक आर्ट करता है जो कि बहुत मजेदार है। जितने भी प्रकार के नव रस हैं जीने को मिल जाते हैं।

आप अपने को विभिन्न किरदारों के लिए कैसे तैयार करते हैं?

मैं ज्यादा प्रिपरेशन नहीं करता हूँ, मैं स्क्रिप्ट और सीन्स को बहुत बार पढ़ता हूँ, फिर डायरेक्टर के साथ बातचीत होती है। जब आप बहुत बार स्क्रिप्ट को पढ़ते हैं, तो आपके अन्दर चीजे समाहित होने लगती हैं। मैं इस विचारधारा में विश्वास नहीं करता कि एक किरदार होता है और वो आपके अन्दर आ जाता है। आप अभिनय करते हैं, ऐसा बिलकुल नहीं होता है। उस किरदार की समझ आपके अन्दर आने लगती है धीरे-धीरे जब आप पढ़ने लगते हैं। जब उस किरदार को समझने लगते हैं, आप उस किरदार के साथ तुलना करने लगते हैं। उस किरदार के जो इमोशन, ग्राफ या जीवन है, वैसी घटना आपके जीवन में भी हुई होती है। हर इमोशन से रस से हर कोई गुजरा होता है। जब आप उस रस से गुजरे थे, तो आपको कैसा महसूस हुआ था। अगर वही महसूस ये किरदार कर रहा होगा तो वो कैसे रिएक्ट करेगा, ये कठिन प्रोसेस है नहीं। बस समझ में आ जाये एक बार, थोड़ी मेहनत लगती है।

शी वेब सीरिज में ट्रांसजेंडर की भूमिका निभाना कैसा एक्सपीरियंस था, किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ा?

बहुत ही सुन्दर एक्सपीरियंस था, मुश्किलें तो बिलकुल नहीं आई। वो किरदार इतना सुन्दर था कि उसे निभाते हुए मुझे तो आनंद आ रहा था। उसके ऊपर खोज करते हुए, उस तरह का शरीर चाहिए था। उसके लिए दौड़ना-भागना, उसके लिए मुझे वजन कम करना था, इस प्रोसेस में बहुत मजा आया। इम्तियाज अली सर के साथ वर्कशॉप हुई तो सब कुछ आसान रहा।

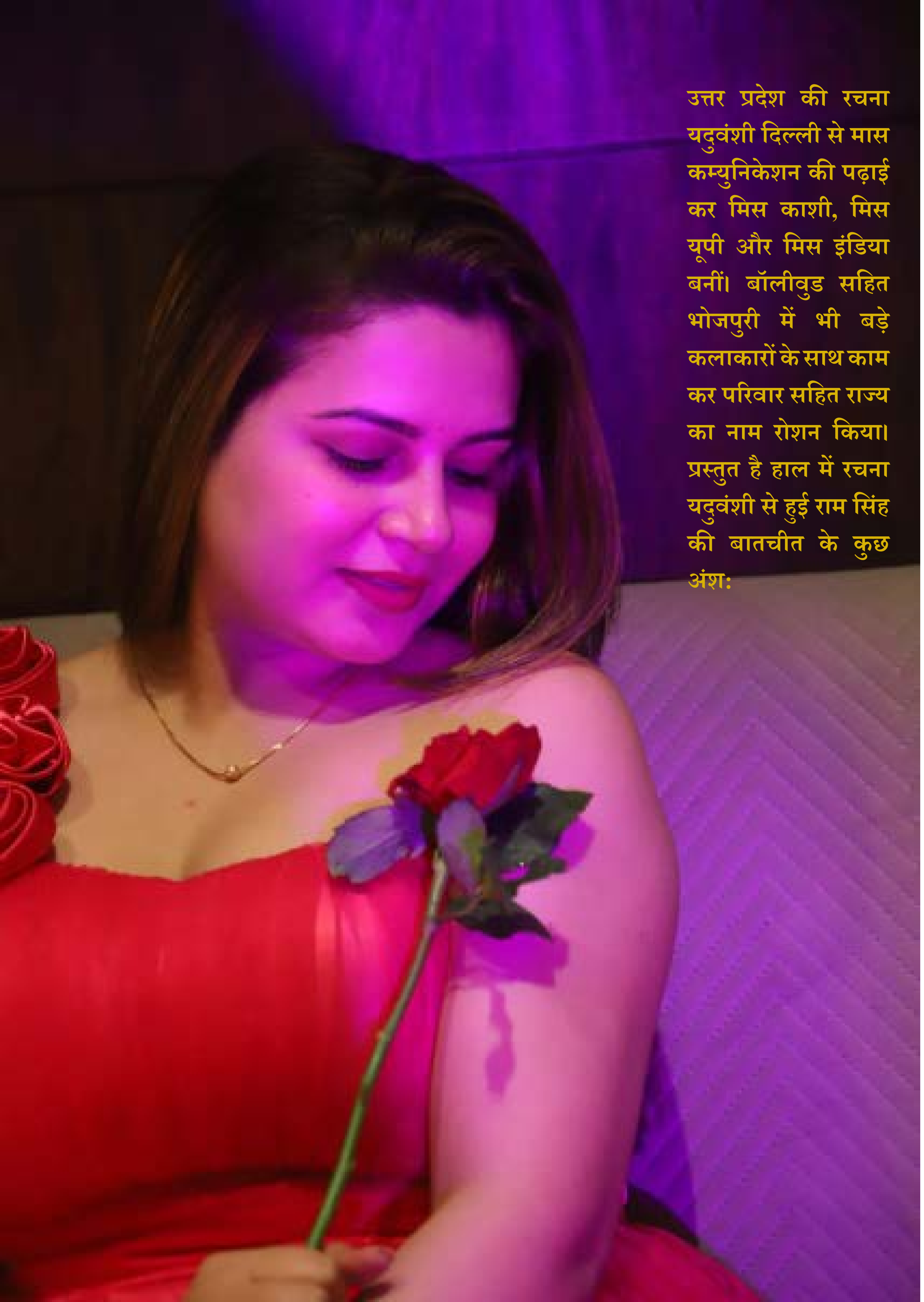

उत्तर प्रदेश की रचना यदुवंशी दिल्ली से मास कम्युनिकेशन की पढ़ाई कर मिस काशी, मिस यूपी और मिस इंडिया बनीं। बॉलीवुड सहित भोजपुरी में भी बड़े कलाकारों के साथ काम कर परिवार सहित राज्य का नाम रोशन किया। प्रस्तुत है हाल में रचना यदुवंशी से हुई राम सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

अगर मैं अभिनेत्री नहीं होती तो पायलट बनती

2016 में मिस यू.पी. बनने के सफर के बारे में कुछ बतायें?

2016 में सबसे पहले मैं मिस काशी बनी थी, फिर मैं मिस यू.पी. की विनर बनी और उसके बाद मैं मिस इंडिया के लिए लड़ी। तीनों प्रतियोगिताएं लगातार थी। तब मैं कॉलेज के अंतिम साल में थी। तभी मेरे एक दोस्त ने बताया कि एक फॉर्म निकला हुआ है, तभी मैंने फॉर्म भरा था और मिस इंडिया का खिताब भी अपने नाम किया।

आप किस राजनीतिक पार्टी से जुड़कर चुनाव लड़ना चाहेंगी?

अभी राजनीति के बारे में, मैं अपना विचार नहीं देना चाहूंगी। सभी पार्टियां अपनी-अपनी जगह पर हैं।

आपने मास कम्युनिकेशन की पढ़ाई की, उसके बाद फिल्म इंडस्ट्री में कैसे आना हुआ?

मुझे बचपन से ही एक्टिंग करनी थी पर पता नहीं था कि क्या और कैसे करना है। अपनी पढाई के समय मैंने फैसला किया कि मुंबई जाना है और उस समय तक मैं मिस इंडिया बन चुकी थी, थोड़ा फेम मुझे मिल चुका था तो मुझे पहली बार में ही काम मिल गया।

आपने भोजपुरी के तीन बड़े सितारों के साथ काम किया है, तीनों सितारों का फीमेल एक्ट्रेस के प्रति कैसा व्यवहार रहता है?

तीनों बहुत बड़े स्टार हैं और तीनों का मिजाज अलग है। मेरे प्रति उनका और उनके प्रति मेरा व्यवहार बहुत अच्छा है, सब लोग केयर करते हैं, थोड़े मजाकिया टाइप के लोग हैं तो उनके साथ काम करने में अच्छा लगा। खेसारी जी के साथ काम करने में बहुत अच्छा लगा, वो मेरे दोस्त भी हैं। दिनेश जी के साथ भी बहुत अच्छा था, वो थोड़ा कम बोलते हैं। चिंटू जी तो बहुत मजाकिया हैं तो उनके साथ भी काम करने में मजा आया।

आप किस कलाकार के साथ काम करना चाहती हैं?

पवन सिंह, रवि किशन, रणवीर कपूर और महेश बाबू के साथ करने की ज्यादा इच्छा है।

अगर आप अभिनेत्री नहीं होती तो क्या होतीं?

अगर आज मैं अभिनेत्री नहीं होती तो मैं पायलट बनती। मेरे घर में कई लोग डिफेन्स बैकग्राउंड से हैं। मेरे पास NCC में ए ग्रेड का सर्टिफिकेट है। पायलट बनने की तैयारी भी मैं कर ही रही थी।

आप किस महिला नेता की जीवनी में काम करना पसंद करुँगी?

इंदिरा गाँधी

कटान फिल्म में काम करने का आपका अनुभव कैसा था?

बहुत अच्छा रहा, क्योंकि इस तरह की फिल्में मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। कटान फिल्म में किसानों की कहानी को दर्शाया गया है। इस मूवी में हर किरदार हीरो है, यह फिल्म हर किसी को पसंद आने वाली है।

भोजपुरी की कुछ अच्छी और कुछ बुरी बातें जो आपने अनुभव की हैं?

अच्छी बात कहूं तो मुझे भोजपुरी मेरा घर-गाँव लगता है, बिलकुल मेरे परिवार जैसा माहौल रहता है। अपनापन बहुत ज्यादा लगता है। थोड़ी खराब बात ये हैं कि भोजपुरी इंडस्ट्री बहुत पीछे है हमारे देखने वाले इतने लोग हैं लेकिन उसके हिसाब से अलग-अलग तरह का काम नहीं है तो उस पर फोकस होना चाहिए।

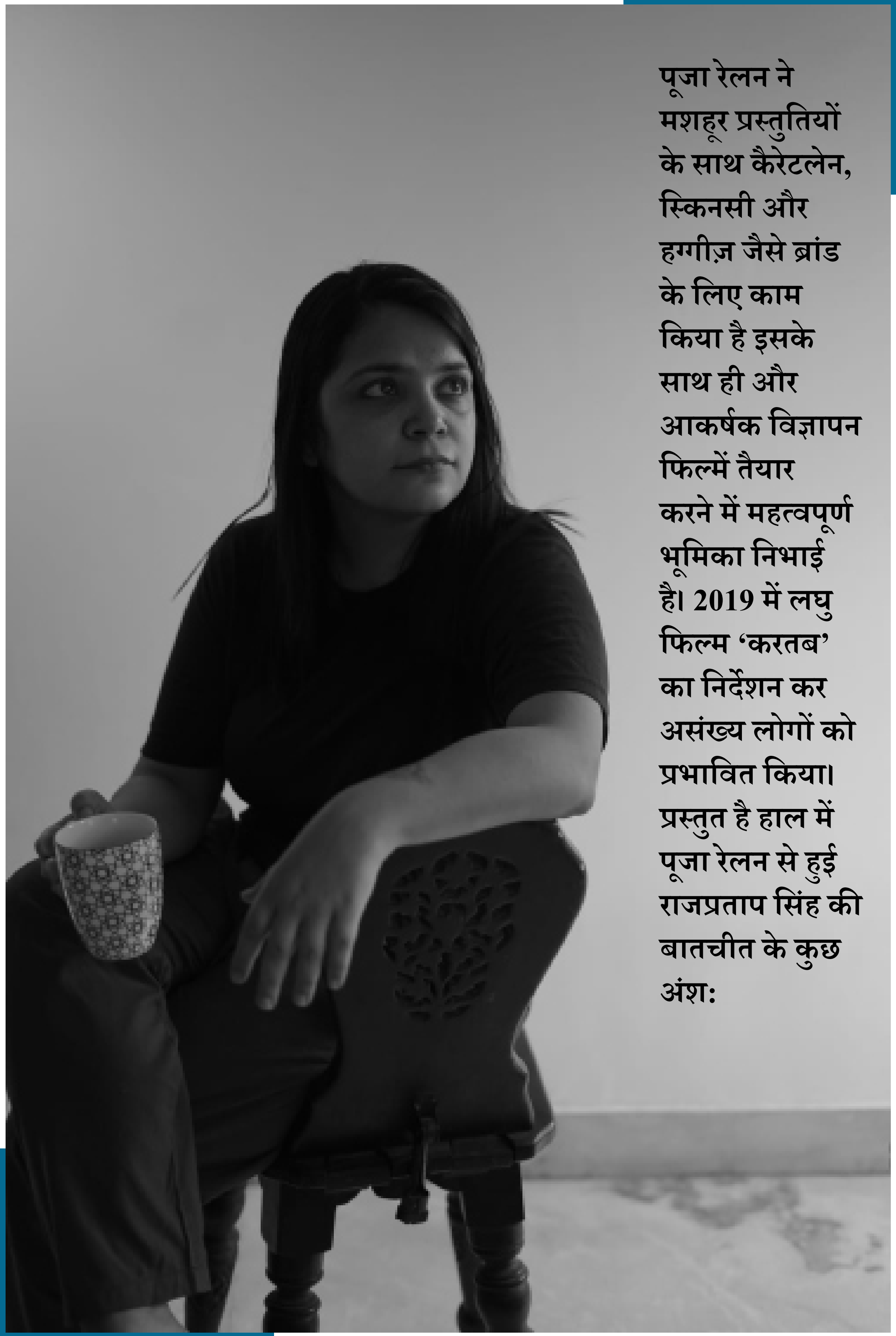

पूजा रेलन ने मशहूर प्रस्तुतियों के साथ कैरेटलेन, स्किनसी और हग्गीज़ जैसे ब्रांड के लिए काम किया है इसके साथ ही और आकर्षक विज्ञापन फिल्में तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2019 में लघु फिल्म 'करतब' का निर्देशन कर असंख्य लोगों को प्रभावित किया। प्रस्तुत है हाल में पूजा रेलन से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

मैं पहले लोगों के सामने बोल नहीं पाती थी

आप फिल्म इंडस्ट्री में काम कर रही हैं. इस क्षेत्र में रुचि कैसे आई?

जब मैं 10वीं कक्षा में थी तब स्कूल के तरफ से दोस्तों के साथ "द लेजेंड ऑफ भगत सिंह" फिल्म देखने गई थी। मुझे फिल्म देखने के बाद देशभक्ति के प्रभाव का एहसास हुआ। 10वीं परीक्षा पास करने के बाद, मैं सोचने लगी कि मुझे किस क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए। उसके बाद अचनाक मुझे फिल्म के प्रभाव में याद आया, फिर मैंने फिल्मी दुनिया में अपना भविष्य बनाने का सोच लिया।

विज्ञापन की शूटिंग से पहले डायरेक्टर को क्या तैयारी करनी पड़ती है?

मुझे लगता है कि सभी डायरेक्टर के पास विज्ञापन बनाने का अपना-अपना तरीका है। डायरेक्टर के पास जब स्क्रिप्ट आती है, तब सोचना पड़ता है कि इसको किस तरीके से फ्रेम करना है। स्क्रिप्ट को एक अलग रूप देना पड़ता है, जिसके लिए जरूरी नहीं है कि कैमरे और पोशाक का जानकारी होना चाहिए। जितना ज्यादा कल्पना करेंगे, विज्ञापन उतना ही शानदार बनेगा। स्क्रिप्ट की पटकथा अवलोकन के साथ अनुभव पर भी निर्भर करता है। उसके बाद विज्ञापन मेकिंग का काम चालू होता है। विज्ञापन ब्रांड के लिए बनाया जाता है, उन्हें पहले बताना पड़ता है कि फिल्म को किस तरह से जनता के सामने प्रदर्शित करना है क्योंकि विज्ञापन में बहुत पैसा लगा होता है।

कम समय में टारगेट ऑडियंस को संदेश देने के लिए क्या चुनौती रहती है ?

यह ज्यादातर ब्रांडिंग टीम के साथ होता है। टारगेट ऑडियंस के बारे में डायरेक्टर को ब्रीफ देना पड़ता है। हम लोग रीवर्स टारगेट से काम करते हैं, जिसमें रिसर्च टीम शामिल होती है। रिसर्च टीम का काम है कि टारगेट ऑडियंस का सैम्पल साइज कितना लेना है और किस तरह का मैसेज जनता तक पहुँचाना है। कैम्पैन रिसर्च टीम के द्वारा चलाया जाता है। इससे पता चलता है कि जनता तक इसका प्रभाव पड़ रहा है या नहीं।

बॉलीवुड में आपका 10 साल का सफर कैसा रहा ?

बॉलीवुड में मेरा सफर काफी दिलचस्प रहा। मैं शुरू से बॉलीवुड और विज्ञापन में ही काम कर रही हूं। कुछ महीनों से मैंने लिखना शुरू किया है। शुरू में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। चीजें समझ नहीं आ रही थी कि आगे क्या करना है। डायरेक्टर बनने के लिए मैंने फिल्म की पढ़ाई नहीं की और सीधे बॉलीवुड में आ गई। 10 सालों में काफी उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ा। प्रतिदिन मैं नए लोगों से मिलती हूँ और मानसिक तौर पर हर परिस्थिति से लड़ने के लिए तैयार रहती हूं।

श्री राम सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स से डिप्लोमा का कैसा अनुभव रहा?

कॉलेज की पढ़ाई के साथ ही थिएटर कोर्स की थी। मैं पहले लोगों के सामने नहीं बोल पाती थी, लेकिन श्री राम सेंटर में मैंने ऐक्टिंग के बारीकियों को सीखा और फिर मैं धीरे-धीरे लोगों से मिलने लगी।

विज्ञापन डायरेक्टर लाइमलाइट में नहीं रहते हैं, इसका क्या कारण है ?

विज्ञापन में ब्रांड सर्वोपरि है। विज्ञापन में डायरेक्टर से ज्यादा प्रोडक्ट्स महत्वपूर्ण है। फीचर फिल्म में डायरेक्टर की भूमिका पर्दे के सामने होती है।

स्टोरी बोर्ड क्या है और विज्ञापन की शूटिंग में स्टोरी बोर्ड का क्या महत्व है ?

स्टोरी बोर्ड में हर शॉर्ट को पहले स्केच कर लेते हैं। स्टोरी बोर्ड का प्रयोग प्री-प्रोडक्शन के समय करते हैं। विज्ञापन में ब्रांड प्लेसमेंट के लिए स्टोरी बॉर्ड

OSCARS 2024

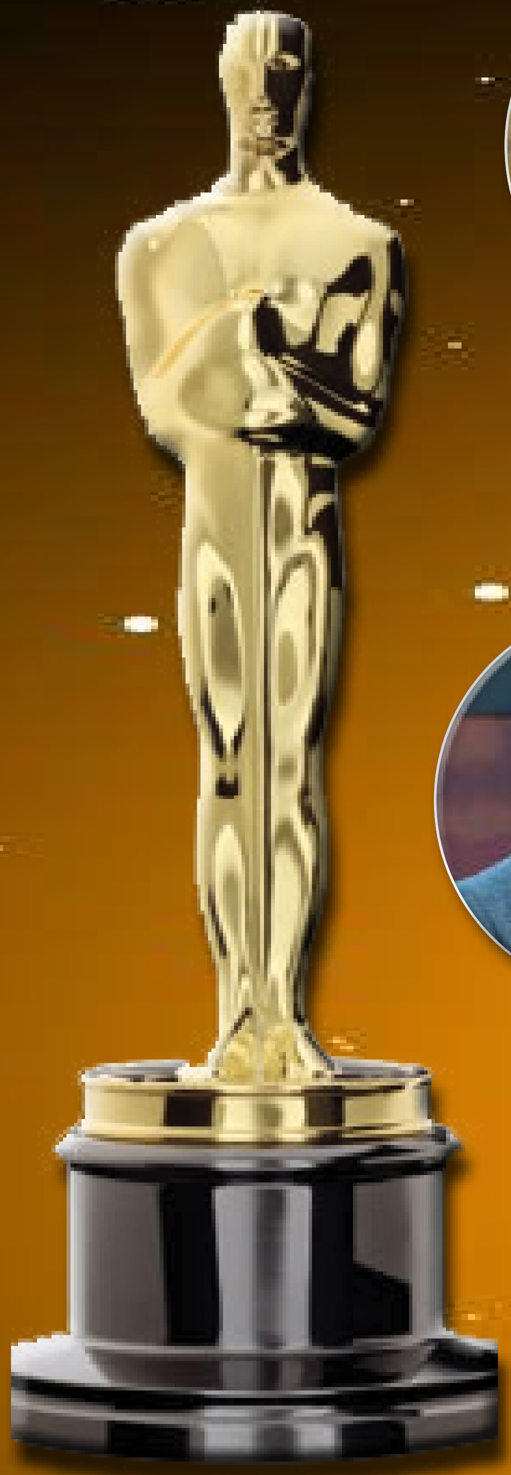

बेस्ट एक्टर
किलियन मर्फी (ओपेनहाइमर)

बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस
डा’वाइन जॉय रैंडोल्फ
(द होल्डओवर्स)

बेस्ट पिक्चर
ओपेनहाइमर

बेस्ट विजुअल इफेक्ट
गॉडजिला माइनस वन

बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर
रॉबर्ट डाउनी जूनियर (ओपेनहाइमर)

बेस्ट डायरेक्टर
क्रिस्टोफर नोलन
(ओपेनहाइमर)

बेस्ट एनिमेटेड फीचर फिल्म
द बॉय एंड द हेरॉन

बेस्ट एक्ट्रेस
एम्मा स्टोन (पुअर थिंग्स)

बेस्ट सिनेमेटोग्राफी
ओपेनहाइमर

बेस्ट फिल्म एडिटिंग
ओपेनहाइमर

गाजियाबाद के दुजाना गांव में जन्मे "अरुण नागर" टी वी सीरियल में असिस्टेंट डायरेक्टर का काम कर बॉलीवुड में अपने निर्देशन और अभिनय का परचम लहरा रहे हैं। नागर ने लेखक और निर्देशक के रूप में अपने करियर की शुरुआत एक वास्तविक घटना पर आधारित "गुर्जर आंदोलन" से की। 'रिस्कनामा 2', 'बल्ली वर्सेज विरजू', 'एंग्री अन्ना', ऐसी तमाम फिल्मों में निर्देशन और अभिनय कर चुके हैं। अरुण निर्देशक, लेखक, और निर्माता के रूप में कई लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। प्रस्तुत है हाल में अरुण नागर से हुई राजप्रताप सिहं की बातचीत के कुछ अंश:

फिल्म गुर्जर आंदोलन से समाज को क्या सन्देश देना चाहते थे, क्या फिल्म के रिलीज होने में राजनीतिक अड़चन आई थी?

लोकतांत्रिक देश में पुलिस की गोलियों से लगभग 80 लोग मर जाते हैं वो भी एक समुदाय के, लेकिन इस बात से किसी इंसान को कोई फर्क नहीं पड़ा। मीडिया से यह बात छुपाई जा रही थी। जब मुझे यह बात पता चली तो मैंने इस पर रिसर्च करके कहानी लिखी। फिल्म का नाम उसी मुद्दे पर रखना था, इसलिए गुर्जर आंदोलन रखा गया। जब फिल्म को रिलीज़ करना था तो कुछ ठेकेदारों ने अड़चन लगाना शुरू कर दिया। सीबीआई तक ख़बर पंहुचा दी कि ये किसी राजनीतिक पार्टी से मिला हुआ है। सीबीआई ने कुछ ऊटपटांग सवाल पूछे। फिर सीबीआई के लिए फिल्म रिलीज़ होने से पहले एक शो अरेंज करना पड़ा। मेरा मोटिव सिर्फ लोगों को जानकारी देना था। मैं किसी भी पॉलिटिकल प्रभाव में नहीं था। फिर भी फिल्म को रिलीज़ नहीं होने दिया। मैंने फिल्म को गुडगाँव, फरीदाबाद में रिलीज़ किया।

लोकतांत्रिक देश में पुलिस की गोलियों से 80 लोग मारे जाते हैं

नेपोटिज़्म को लेकर आपके क्या विचार हैं?

नेपोटिज्म सभी जगह है यही सच्चाई है। टैलेंट तो सभी जगह मायने रखता है जैसे - राज कपूर बहुत बड़े शो मैन के तीन बेटे थे, लेकिन एक ही बेटा फिल्म इंडस्ट्री में चल पाया। नेपोटिज्म आपको पहली बार काम दिला सकता है। मगर आपके पास टैलेंट नहीं है तो टिक नहीं सकते। अगर आप निरंतर काम करते रहेंगे, संघर्ष करते रहेंगे तब आप अपने मुकाम को हासिल कर लोगे।

चलन के अनुसार फिल्म बनाएंगे या कुछ अलग दिखना चाहेंगे?

फिल्म तब चलेगी जब उसमें कुछ हटकर होगा। छोटे बजट की फिल्म जैसे तेरे बिन लादेन, फुकरे इत्यादि ने बहुत नाम कमाया। आपको नया देना पडेगा, जब तक आप कुछ अलग नहीं बनाओगे तब तक आपकी पहचान नहीं बनेगी। हम हर बार अपने दर्शकों के लिए नई तरह की फिल्में बनाएंगे।

आपकी आने वाली फिल्म "माँ पन्ना गुर्जरी" के बारे में कुछ बताएं?

माँ पन्ना गुर्जरी को "पन्ना धाय" बोला जाता है। ये सन 1500 की कहानी है, जिनका राजघराने में आना जाना था। राजघराने में सिंहासन के लिए आपसी लड़ाई हो गई, जिसमें राजा के एक बेटे को मार दिया जाता है, दूसरे बेटे को मारने जा रहे होते हैं। तब पन्ना ने उनके बेटे के स्थान पर अपने बेटे को राजकुमार के कपड़े पहनाकर सुला देती हैं। वो माँ पन्ना के बेटे को राजकुमार समझकर मार देते हैं। 'माँ पन्ना' ने अपने बेटे की कुर्बानी देकर अपनी देशभक्ति दिखाई। 'माँ पन्ना' राजकुमार को शिक्षा दिलवाती हैं और 15 साल बाद पूरे राज्य को वापस हासिल करवाती हैं।

नए कलाकारों को कुछ सन्देश देना चाहेंगे?

नए कलाकारों को सबसे पहले अपने हुनर पर काम करना चाहिए। आज के कलाकारों को फिल्म देखनी चाहिए और उसमें एक्टर ने एक्टिंग कैसे की है वो सोचना चाहिए। एक्टर्स की बायोग्राफी को पढ़ना चाहिए। मैं खुद ऐसा करता हूँ। कोई नया कलाकार इस इंडस्ट्री में आना चाहता है तो सबसे पहले उसे काम सीखना चाहिए, फिर इस लाइन में आना चाहिए। कुछ लोग बिना सीखे काम मांगने आ जाते हैं और उन्हें लगता है कि एक्टिंग तो आसान है, पर ऐसा नहीं है। इसलिए मेरी सलाह यही है कि पहले काम सीखें फिर काम मांगने आयें।

आपकी शुरुआत टी.वी से हुई। फिल्मों की तरफ रुख कैसे, क्योंकि दोनों में बहुत अंतर है?

एक्टर और फिल्म डायरेक्टर बनने के लिए ही मुंबई गया था। लेकिन पैसे न होने के कारण से जो काम मिला वो किया। जिससे मैं मुंबई में रह सकूं और अपनी जीविका चला सकूं। टी.वी में सात-आठ साल तक असिस्टेंट डायरेक्टर का काम किया। उस समय पर 50 या 60 रूपए प्रतिदिन मिलते थे। आठ साल बाद लगा कि काम को रिपीट कर रहें, जो सीखना था वह सीख चुके हैं। टी.वी सीरियल में काम सिर्फ रोजमर्रा के लिए किया, क्योंकि टी.वी में ज्यादा सीखने को कुछ मिलता नहीं है।

बड़े पर्दे पर दिखने वाली सुंदर चीजें कई लोगों की दिन-रात की मेहनत होती है। इन जादूगरों को 'आर्ट डायरेक्टर' कहा जाता है। शशि कांत रंजन उन्हीं जादूगरों में से एक हैं। 'जनहित में जारी', 'फिरंगी' और 'द ताशकंद फाइल्स' जैसी फिल्मों में कला निर्देशन के नायाब नमूने पेश करने वाले शशिकांत रंजन बॉलीवुड के जाने-माने आर्ट डायरेक्टर हैं। प्रस्तुत है हाल में शशिकांत रंजन से हुई किशन सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

कल्पना को पर्दे पर उतारना चुनौतीपूर्ण

आपने अपनी पढ़ाई जामिया मिल्लिया इस्लामिया से फाइन आर्ट्स में की है, आप उन दिनों को कैसे याद करते हैं?

जामिया में गुजारे दिनों को मैं गोल्डन ऐज मानता हूं, क्योंकि जामिया ने मुझे जिंदगी जीने का तरीका सिखाया। मैं आज भी उन दिनों को जब याद करता हूं, उसे महसूस करता हूं तो ऐसा लगता है सच में मेरे सफर में जामिया की बड़ी भूमिका रही है।

जब आप दिल्ली से मुंबई की ओर निकले, तो शुरुआती दिन कैसे बीता?

जैसे ही मेरी पढ़ाई पूरी हुई तो मुझे आर्ट डायरेक्शन और प्रोडक्शन डिजाइनिंग के क्षेत्र में ही आगे बढ़ना था। मैंने जब इस क्षेत्र के बारे में पता लगाया तो मालूम हुआ कि दिल्ली में उतना स्कोप नहीं है। मुझे मुंबई जाना ही पड़ेगा। हालांकि, मैंने दिल्ली में रहते हुए एनडीटीवी के लिए भी काम किया। वहां पर एक 'रेड डॉट प्रोडक्शन' नाम की कंपनी थी, जो गली-गली सिम-सिम नामक शो के प्रोडक्शन डिजाइन का देख रही थी। तो शुरूआती दिनों में मैंने वहां भी काम किया।

आर्ट डायरेक्शन के क्षेत्र में होने वाले कार्यों के बारे में बताएं?

सिनेमा के इस क्षेत्र को हिंदी में 'कला निर्देशन और निर्माण संरचना' कहा जाता है। इसमें किसी स्टोरी के सार को समझना होता है और लुक एंड फील पर ध्यान दिया जाता है कि कोई भी चीज पर्दे या स्क्रीन पर कैसी दिखेगी। कई तरह की फिल्में होती हैं जैसे कुछ फिल्में इतिहास पर आधारित होती है, कुछ बायोग्राफी पर आधारित होती हैं तो कुछ ड्रामा बेस्ड होती हैं, तो हम उस स्पेस में जाते हैं जहां कि स्टोरी होती है। उस कल्चर को समझते हैं। हम फिल्मों के समयकाल को ध्यान में रखते हुए लाइब्रेरी खंगालते हैं, इंटरव्यू लेते हैं या रिसर्च शामिल होती है।

ज्यादातर लोग मुंबई एक्टर, डायरेक्टर बनने के सपने के साथ जाते हैं, आपने आर्ट डायरेक्शन को ही क्यों चुना?

मैंने पेंटिंग और विजुअल स्टडी में पढ़ाई की है और मुझे लगता है कि यह काम मैं बेहतरी से कर सकता हूं। वैसे तो मैंने डायरेक्टर के तौर पर शॉर्ट फिल्म भी बनाई है। जिस प्रकार हम एक पेंटिंग बनाते हैं, तो उसमें कहानी और कॉन्सेप्ट होता है। उसी प्रकार, आर्ट डायरेक्शन और प्रोडक्शन डिजाइन करते हैं तो टेक्निक्स को फॉलो करना पड़ता है। एक कहानी होती है, उसको इमैजिन, करना पड़ता है। आर्ट डायरेक्शन कई चीजों का मिश्रण है, अलग-अलग विधाओं के लोग जुड़े होते हैं, जिससे एक अलग प्रकार का माहौल होता है, जिसमें काम करने मुझे मजा आता है।

फिल्मों में हमें कई जगहों के सीन दिखाई देते हैं लेकिन अधिकतर शूटिंग स्टूडियो में की जाती हैं, ऐसे में इमेजिनेशन को पर्दे पर उतारना कितना मुश्किल काम है?

हम इन मामलों में केस स्टडी करते हैं। कई लोगों की टीम होती है। मान लीजिए कि शिमला के सीन को मुंबई में शूट करना है, ऐसी स्थिति में टीम के कुछ लोग शिमला जाते हैं, वहां की तस्वीरें, वीडियो बना कर लाते हैं, फिर उसको ध्यान में रखकर स्केच बनाए जाते हैं।

आपने "जनहित में जारी" और साइंस फिक्शन "एकांत" शॉर्ट फिल्म में काम किया है। बदलती कहानी के मुताबिक आर्ट डायरेक्शन में क्या बदलाव होते हैं?

अलग तरह की फिल्मों में हमारा काम बिल्कुल अलग हो जाता है। इतिहास पर आधारित पीरियड ड्रामा फिल्में सबसे मुश्किल होती हैं, क्योंकि हमें हर छोटी-छोटी चीजों पर ध्यान देना पड़ता है कि काई चीज जो उस जमाने की न हो, वो पर्दे पर न दिखे। कल्चर का भी खास ध्यान रखना पड़ता है बायोग्राफिकल फिल्में जैसे 'द ताशकंद फाइल्स' भी चुनौती पेश करती हैं।

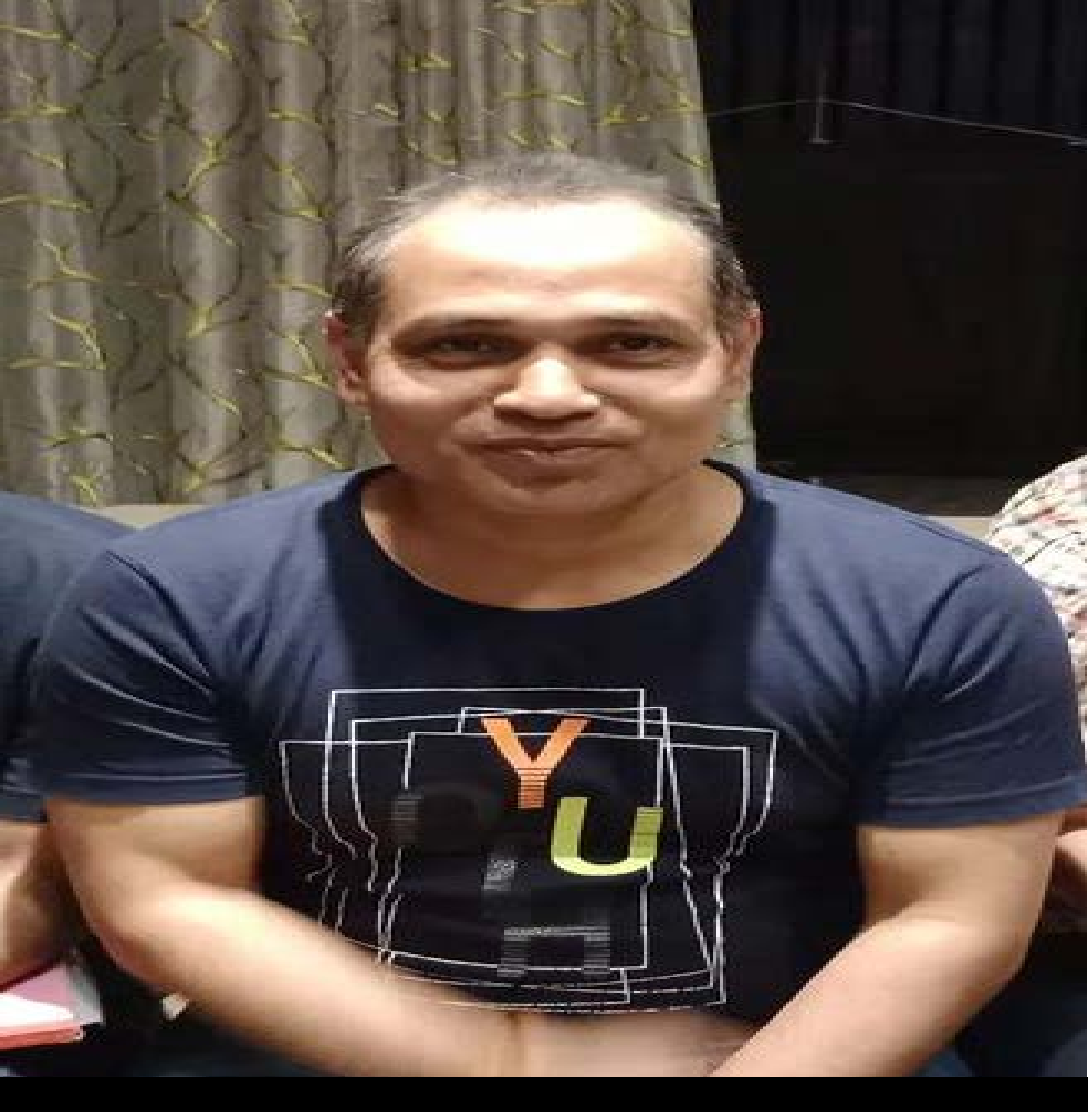

छोटे से गाँव से निकलकर मुंबई में असिस्टेंट डायरेक्टर बन निर्देशक सुमित सागर ने फिल्मों और टीवी सीरियल का निर्देशन कर फिल्म जगत में अपने लिए जगह बनाई। टीवी सीरियल "घर परिवार" , फिल्म "प्रेमातुर" और दो वेब सीरिज "हनी ट्रैप", "इश्क्यापा" में निर्देशन का बेहतरीन काम कर अपने गाँव का नाम रोशन किया। प्रस्तुत है हाल में सुमित सागर से हुई अभयजीत यादव की बातचीत के कुछ अंश:

आप सच्चे दिल से कोशिश करते हैं तो हर टीम में अपनी जगह बना सकते हैं।

आपकी फिल्म प्रेमातुर बड़े पर्दे पर कुछ खास प्रदर्शन ही कर पायी थी?

जब हम कोरोना की पहली वेब से लड़ रहे थे। उसी समय मेरे मित्र ने फोन करके कहा, एक फिल्म बनाते हैं। मैंने कहा पागल हो क्या? उसने स्क्रिप्ट भेजी और मुझे कहानी पसंद आ गई। 6 महीने में शूटिंग पूरी कर ली। कोरोना की दूसरी लहर में ही हमारी फिल्म रिलीज हुई और फिल्म सभी लोगों तक नहीं पहुंच पाई। ये एक बड़ा कारण था।

आपने एक के बाद एक टी.वी. सीरियल में काम किया है तो फिल्म निर्देशन की तरफ क्यों रूख कर रहे हैं?

हर आदमी का एक सपना होता है। वह अपने जीवन में घर बनाता है और ख्वाहिश रहती है कि एक दिन बाद वह बंगला बनाएगा। मैंने बहुत टीवी सीरियल में काम किया। मैंने फिल्म इसलिए की कि वहां ग्रोथ है। अगर मैं फिल्म नहीं करता तो मेरा ग्रोथ रूक जाता। फिर मैंने बहुत मुश्किल से फैसला किया और चलते हुए सीरियल से निकल गया। उसके बाद बहुत से सीरियल के लिए काम आया लेकिन मैं नहीं गया। मैं अड़ा रहा कि अब फिल्म ही करनी है और अच्छी फिल्म करनी है।

बॉलीवुड में परिवारवाद का क्या प्रभाव है?

परिवारवाद हर जगह है। आप देखिए तो राजनीति में, व्यापार में और एक छोटे से सरकारी टेंडर में भी है।

आप मुम्बई में एक्टर बनने आए थे, क्या आपको हम फिल्मों में एक्टिंग करते देख पाएंगे?

यह बात सही है कि मैं एक्टर बनने आया था। जब आप एक बार पटरी बदल देते हैं तब फिर उस पटरी पर आना मुश्किल होता है। इच्छा तो बहुत है लेकिन कहते हैं एक डायरेक्टर कंप्लीट एक्टर होता है। हमने एक्टर से ज्यादा भारी काम डायरेक्शन का चुना। अब आऊँ तो शायद एक ही सीन हो

अपनी फिल्म यात्रा के बारे में कुछ बताए?

मैं कुछ ऐसा करना चाहता था जिससे लोगों की नजरों में दिखूँ। जब आप एक छोटे से शहर से बड़े शहर में आते हैं, जहाँ आपको कोई नहीं जानता है। आपको खुद ही सब कुछ करना होता है। मुम्बई आया था तो लोगों को यह नहीं बताया था कि मैं एक सभ्य और मजबूत परिवार से हूँ। मैं बताता था कि मेरे पिता जॉब करते हैं। मैं ऑफिस घूमता था और लोगों को फोटोग्राफ दिखाता था कि मैंने पटना दूरदर्शन के लिए छोटे-छोटे कई सारे सीरियल में काम किया था। उस समय मेरे सारे दोस्त मजाक उड़ाते थे कि यही तो बनेंगे बाकी हम सब तो वापस चले जाएँगे। हुआ यही कि हम 2 लड़के ही टिके बाकी वापस चले गए। 9 महीने बाद मुझे एक जगह सहायक निर्देशक का काम मिल गया और एसेल स्टूडियो में ऑडिशन देने गया तब पंकज धीर मिल गए। उन्होंने कहा एक्टिंग क्यों करनी है तब मैंने कहा एक्टिंग नहीं करूँगा तो लोग कैसे देखेंगे। उन्होंने कहा, कुछ और करना चाहिए तुम्हें। फिर मैंने डायरेक्शन में काम ढूँढना शुरु किया। दूरदर्शन सीरियल शक्ति के डायरेक्टर राकेश परमार के साथ काम किया। उन्होंने मुझे देखा और कहा बहुत अच्छा काम कर रहे हो। तब से लेकर आज तक मैं प्रतिदिन इस क्षेत्र में सीख रहा हूँ।

कोई आपकी टीम से जुड़ना चाहे तो क्या प्रक्रिया रहेगी?

यह एक बहुत ही लम्बी प्रक्रिया है। पहले आप आइए, देखिए और समझिए। क्योंकि यहां जितनी चमक है बाहर से उतना ही अंधकार है इसके पीछे। यही समस्या है कि लोगों को वह अंधकार नहीं दिखता है। कहें तो अगर आप दृढ़संकल्प के साथ मेहनत करते हैं तो अपनी जगह जरूर बना लेंगे ।

मध्यप्रदेश में आर्टिस्ट बहुत कम प्राइस में मिल जाते हैं

फिल्म 'प्यारी तरावली द टू स्टोरी' , 'ना उम्र की सीमा हो' सीरियल और सावधान इंडिया में काम कर गुंजन लोधी मध्यप्रदेश से ही बॉलीवुड फिल्मों में परचम लहरा रही हैं। प्रस्तुत है हाल में गुंजन लोधी से हुई अवनीश चौधरी की बातचीत के कुछ अंश:

'प्यारी तरावली द टू स्टोरी' मूवी में काम करने का अनुभव कैसा रहा?

प्यारी मूवी शूट बेरसिया में हुई थी जहां मेरा घर है। एक्टिंग लाइन में यह मेरा पहला काम था, जो थिएटर से पहले मैंने किया था। उस टाइम मैंने सोचा भी नहीं था कि मैं एक्टर्स बनूंगी। सबसे पहले मैंने हिंदी फिल्म में काम किया। उसके बाद मैंने थिएटर किया। प्यारी का एक्सपीरियंस सब कुछ नया था क्योंकि मैंने शूटिंग पहली ही बार देखी थी कि ऐसे शूट किया जाता है। प्लस पॉइंट मेरे लिए अच्छा यह रहा कि मैंने सबसे पहले हिंदी फिल्म में ही शूटिंग की। जिससे मुझे आगे परेशानी नहीं हुई।

एक टर्म सुनने को मिलता है कास्टिंग काउच, आप इसे सत्य मानती है या भ्रम?

कास्टिंग काउच जो आप कह रहे हैं, मैंने तो ऐसा एक दफा भी सामना नहीं किया। मेरे साथ व्यवहार हमेशा अच्छा रहा है। कास्टिंग काउच से हमेशा बचकर रहना चाहिए।

सावधान इंडिया में काम करना कितना चैलेंजिंग होता है?

सावधान इंडिया में काम करना चैलेंजिंग नहीं होता है, बल्कि मजा बहुत आता है, क्योंकि स्टोरी बहुत ज्यादा अलग होती है। जब हम शूट करते हैं तो हमें खुद उत्सुकता रहती है कि आगे क्या होगा?

"न उम्र की सीमा हो" सीरियल में सेट का माहौल कैसा था?

"न उम्र की सीमा हो" सीरियल स्टार भारत पर आता था। इसका माहौल काफी अच्छा था। इसका प्रोमो शूट महेश्वर में हुआ था जो इंदौर के पास है। प्रोमो में ज्यादा कलाकार नहीं थे। लीड कैरेक्टर मिलाकर हम 6 लोग थे।

मध्यप्रदेश में कुछ सालों शूटिंग ग्राफ लगातार बढ़ रहा है। आप इसकी वजह किसको मानती हैं?

लोकेशन और आर्टिस्ट भी बहुत आसानी से मिल जाते हैं। यहां पर लोकेशन और आर्टिस्ट के प्राइस बहुत कम हैं। मध्यप्रदेश में हर तरह के कैरेक्टर मिल जाएंगे। इसलिए यहां पर शूटिंग करना भी आसान हो जाता है।

फिल्मों में या सीरियल में एंट्री पाने के लिए थियेटर का कितना योगदान रहता है?

फिल्मों में या सीरियल में एंट्री पाने के लिए थिएटर का योगदान तो रहता है, क्योंकि हमारे कनेक्शन थिएटर से बनते हैं तो थिएटर भी जरूरी है। थियेटर से एक्टिंग की अच्छी समझ आ जाती है। लेकिन आजकल इंस्टाग्राम रील्स और शॉर्ट वीडियो के चक्कर में थिएटर वालों की वैल्यू कम होती जा रही है।

एमपी में रहकर ही सिनेमा में काम करना चाहती है या मुंबई जाना है?

मुंबई जाने का सपना हर कलाकार का होता है, लेकिन मैंने नहीं सोचा ऐसा कि मुझे मुंबई जाना चाहिए। क्योंकि मध्य प्रदेश ही हब बनता जा रहा है। ज्यादातर शूटिंग तो एमपी में ही हो रही हैं। तो हम क्यों कहीं बाहर जाएं।

इस क्षेत्र में आने के लिए एक महिला को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

किसी भी क्षेत्र में जाते हैं खासकर सिनेमा के क्षेत्र में आप खुद पहल कर रहे हैं तो अलग चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह तो नॉर्मल है जब बात एक्टिंग की आती है, तो उसमें ज्यादा ही स्ट्रगल है स्पेशल लड़कियों के लिए।

कलाकार आरव शर्मा 'एक दूजे के वास्ते 2' , सावधान इंडिया और क्राइम पेट्रोल में काम कर अपने राज्य और शहर का नाम रोशन कर रहे हैं। साथ में यूट्यूब चैनल के जरिए भी लोगों को हंसा रहे हैं। प्रस्तुत है हाल में आरव शर्मा से हुई अवनीश चौधरी की बातचीत के कुछ अंश:

शाहरुख ख़ान के ऊपर तो मैं किताब लिख सकता हूं

आप एक्टर बनेंगे, ये आपने कब सोचा था?

मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा था कि एक्टिंग करूंगा। मनोरंजन के लिए यूट्यूब चैनल बनाया और इसी पर कॉमेडी वीडियो बनाता था। ठीक-ठाक व्यूज आते थे, लेकिन अच्छा लगता था कि हम लोगों का तनाव दूर कर रहे हैं। चैनल की वीडियो देखकर सावधान इंडिया के लिए मुझे कॉल आया। भगवान की कृपा से पहला ब्रेक मुझे मिला था।

'एक दूजे के वास्ते 2' सीरियल में आपकी कास्टिंग कैसे हुई?

जब मैं सावधान इंडिया और क्राइम पेट्रोल के एपिसोड कर रहा था तब लॉकडाउन लग गया था। भोपाल में इस सीरियल की शूटिंग हो रही थी। इनकी कास्टिंग टीम भी सावधान इंडिया वाली ही थी, तब उन्होंने मुझे कॉल किया और उसके बाद लुक टेस्ट देकर इस सीरियल में मेरी कास्टिंग हुई।

एमपी में भी शूटिंग के लिए सेट बनाए जाते हैं या ज्यादातर नेचुरल लोकेशंस पर शूट होता है?

एमपी में शूटिंग के लिए सेट कम ही बनाए जाते हैं। डेली सोप की शूटिंग लंबे समय के लिए चलती है, उसके लिए सेट बनाए जाते हैं क्योंकि वो बुक किए हुए रिजॉर्ट का कब तक किराया देंगे और ज्यादातर मूवीज भी नेचुरल लोकेशंस पर शूट हैं।

क्या मध्यप्रदेश में कास्टिंग की प्रक्रिया में नेपोटिज्म और फेवरिटिज्म काम करता है?

अच्छा कलाकार हर जगह सबसे आगे होता है। जान-पहचान से हर फील्ड में काम मिलता है लेकिन यहां पर यह कम है। यहां पर स्ट्रगल भी कम है। ज्यादातर कास्टिंग प्रक्रिया मुंबई से ही होती है तो ऐसा भेदभाव नहीं होता है। हालांकि यहां के एक्टर को मुंबई के एक्टर की अपेक्षा पैसा भी कम मिलता है। कलाकार में काबिलियत है तो अच्छा काम मिल जाता है।

आप शाहरूख खान से इतने इंस्पायर क्यों हैं?

शाहरुख ख़ान के ऊपर तो मैं किताब लिख सकता हूं। एक्टर से ज्यादा उनसे इंसान के तौर पर प्रेरित हूं। उनका ह्यूमर, इंटरव्यूज में सवालों का जवाब देना, चैरिटी और एक्टर्स की तरह दिखावा न करना काफी अच्छा लगता है। मेरा एक ही सपना है कि उनके साथ काम करने का मौका मिला तब मैं उनसे बहुत कुछ सीखकर एक्टिंग की दुनिया में आगे बढ़ूंगा।

मध्यप्रदेश में फिल्मों की शूटिंग के लिए सरकार को क्या पहल करनी चाहिए?

सरकार तो पहले से बहुत कुछ कर रही है। कलाकारों को अच्छा काम मिल रहा है। रविन्द्र भवन में प्रोग्राम अक्सर होता है और सेलिब्रिटी भी आते हैं। कोई भी फिल्ममेकर मध्यप्रदेश आता है तो सीएम से मिलकर यहां पर फिल्म बनाने का वादा करके जाता है और बहुत से फिल्ममेकर इसको पूरा भी करते हैं।

68 वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड में मध्यप्रदेश को मोस्ट फिल्म फ्रेंडली स्टेट का अवॉर्ड मिला था। क्या ये अवॉर्ड फिल्म निर्देशकों को यहां पर खींचकर ला रहा है?

मध्य प्रदेश के भोपाल में अनुराग बसु आए तब उन्होंने कहा कि यहां पर फिल्म की शूटिंग करेंगे। लोग इसलिए आ रहे है क्योंकि दूसरे राज्य के मुकाबले यहां शूटिंग करना सस्ता है। नेचुरल लोकेशंस आसानी से मिल जाती हैं। रहने की व्यवस्था भी अच्छी है और लोकल एक्टर्स आसानी से मिल जाते हैं। सरकार द्वारा अधिक सुविधाएं भी दी जाती हैं।

किसान के बेटे भानुप्रताप ने बॉलीवुड में लहराया परचम

बिहार के ख्वाजेपुर गाँव में जन्में भानुप्रताप सिंह को 2011 में पहली बार बॉलीवुड में एंट्री मिली। भानु लगभग 70-80 फिल्मों में स्टीडिकैम ऑपरेटर का काम कर चुके हैं। हाल ही में रिलीज हुई 'डंकी' फिल्म में शाहरुख खान के साथ काम कर अपने गाँव का नाम रोशन किया है। भानु अपने काम से बहुत लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। प्रस्तुत है हाल में भानुप्रताप सिंह से हुई राजप्रताप सिंह की बातचीत के कुछ अंश:

स्टीडिकैम ऑपरेटर क्या है, इसके बारे में कुछ बताएं?

स्टीडिकैम एक स्पेशल जॉब है जो एक स्पेशल कैमरा ऑपरेशन होता है, "दिस इज़ कॉल्ड स्टीडिकैम"। कैमरा उसके ऊपर लग जाता है और ऑपरेटर उसे ऑपरेट करता है। स्पेशल शॉट्स के लिए इसका इस्तेमाल होता है।

सीन शूट करते समय किस तरह के चैलेंज आते हैं?

चैलेंज तो कई आते हैं। जब रनिंग शॉट्स होते हैं तब थोड़ा टफ होता है, अब तो आदत हो गई है। हर दिन एक नया चैलेंज होता है। शॉट्स को अच्छी तरह से कैसे शूट करें, उसकी खूबसूरती को कैसे निखारें। हर शॉट अपने-आप में एक चैलेंज है।

आपके मन में कभी फुल टाइम डीओपी बनने का ख्याल आता है?

मैंने एज़ अ डीओपी के तौर पर लगभग 50 गाने शूट किए हैं। कई बार लगता है कि ये छोड़ के नया कुछ शुरू करना पड़ेगा, नया स्ट्रगल शुरू होगा। मुझे लगता है उम्र सीमा भी नहीं है कि आप नई चीज़ शुरू करने जाओ और फिर उसमे समय दो। कभी फिल्म मिले या न मिले। क्योंकि स्वतंत्र डीओपी आप पर कोई तब विश्वास करेगा जब आपने काफी काम किया हो।

व्यस्त शेड्यूल में दोस्तों और परिवार के लिए समय कैसे निकालते हैं?

ये थोड़ा मुश्किल है, क्योंकि निजी जिन्दगी थोड़ी अस्त-व्यस्त है। मैं परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों को समय नहीं दे पाता हूं। मैनेज करना बहुत मुश्किल होता है। शूट खत्म करने के बाद समय निकालना पड़ता है, लेकिन पूरा समय नहीं दे पाते हैं। परिवार वालों की कई शिकायत रहती हैं।

किस टाइप के शॉट्स के लिए स्टीडिकैम का उपयोग किया जाता है?

ज्यादातर वॉक एंड टॉक, रनिंग, फ़ास्ट मूमेंट और चेजिंग शॉट्स में काफी उपयोग किया जाता है।

हर डायरेक्टर और डीओपी का विज़न अलग होता है, उसको कैसे मैनेज करते हैं?

थोड़ा टाइम लगता है। 2 या 4 घंटे लग सकते हैं या फिर बड़ी फिल्म कर रहे हैं तो दो या चार दिन लगता है तो आप समझ जाते हैं किसका क्या विज़न है। किसको किस तरह की फ्रेमिंग पसंद है तो हर बार थोड़ा एडजस्ट होने में समय लगता है।

4 या 5 मिनट के वन टेक शॉट में क्या तैयारी करनी पड़ती है?

वन टेक शॉट लेने से पहले काफी प्रैक्टिस करना पड़ता है।

स्टीडिकैम ऑपरेटर बनने की क्या प्रक्रिया है?

स्टीडिकैम ऑपरेटर बनने का कोई मानदंड नहीं है। जब कोई मेरे पास आता है तो मैं उसकी सहायता करता हूं। सब कुछ प्रैक्टिस से आता है, हर क्षेत्र में समय देना पड़ता है। 4 या 10 दिन में कुछ नहीं आता। भारत में स्पेशल कोई कॉलेज नहीं है। लेकिन जिस भी कॉलेज में सिखाते है उसमे बेसिक बताया जाता है कि ये स्टीडिकैम है। स्पेसिफिक कॉलेज या संस्थान नहीं है कि इसके लिए ट्रेंड किया जा सके।

डंकी फिल्म का अनुभव कैसा रहा?

कमाल की फिल्म है। मैंने इस फिल्म में लगभग 125 दिन शूट किया था, अभी वो हिट हो गई तो और अच्छा लगता है। उसके लिए काफी आउटडोर शूट किए गए थे। स्टीडिकैम का काफी काम था।

सितारों की झलक पाने के लिए हजारों की भीड़ लग जाती है। आप उनके साथ काम करते हो, बात करते हो तब आपको कैसा महसूस होता है?

अब इंडस्ट्री में यह बात छोटी हो गई है, क्योंकि अपने लिए तो ये काम ही है। आप रोज़ यही कर रहे होते हैं। तब ये सब आपके लिए रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल हो जाता है। अब ऐसा लगता है कि लोग भीड़ क्यूँ लगा रहे हैं, लेकिन उनके पॉइंट ऑफ़ व्यू से देखो तो ये बड़ी बात है।

DADASAHEB PHALKE LIST OF AWARD RECIPIENTS BY YEAR

1969 (17th NFA)
DEVIKA RANI
HINDI

1970 (18th NFA)
B.N. SIRCAR
BENGALI

1971 (19th NFA)
P. KAPOOR
HINDI

1972 (20th NFA)
PANKAJ MULLICK
BENGALI, HINDI

1973 (21st NFA)
RUBY MYERS
HINDI

1974 (22nd NFA)
B.N. REDDI
TELUGU

1975 (23rd NFA)
D.N. GANGULY
BENGALI

1976 (24th NFA)
KANAN DEVI
BENGALI

1977 (25th NFA)
NITIN BOSE
HINDI, BENGALI

1978 (26th NFA)
RAICHAND BORAL
HINDI, BENGALI

1979 (27th NFA)
SOHRAB MODI
HINDI

1980 (28th NFA)
PAIDI JAIRAJ
HINDI

1981 (29th NFA)
NAUSHAD
HINDI

1982 (30th NFA)
L.V. PRASAD
TAMIL, TELUGU

1983 (31st NFA)
DURGA KHOTE
HINDI, MARATHI

1984 (32nd NFA)
SATYAJIT RAY
BENGALI

1985 (33rd NFA)
V. SHANTARAM
HINDI, MARATHI

1986 (34th NFA)
B. NAGI REDDI
TELUGU

1987 (35th NFA)
RAJ KAPOOR
HINDI

1988 (36th NFA)
ASHOK KUMAR
HINDI

1989 (37th NFA)
L. MANGESHKER
HINDI, MARATHI

1990(38th NFA)
A.N. RAO
TELUGU

1991 (39th NFA)
B. PENDHARKAR
MARATHI

1992(40th NFA)
B. HAZARIKA
ASSAMESE

1993 (41st NFA)

M. SULTANPURI

HINDI

1994 (42nd NFA)

DILIP KUMAR

HINDI

1995 (43rd NFA)

RAJKUMAR

KANNADA

1996 (44th NFA)

SHIV GANESAN

TAMIL

1997 (45th NFA)

KAVI PRADEEP

HINDI

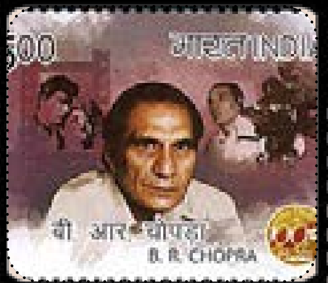

1998 (46th NFA)

B.R. CHOPRA

HINDI

1999 (47th NFA)

H. MUKHERJEE

HINDI

2000 (48th NFA)

ASHA BHOSLE

HINDI, MARATHI

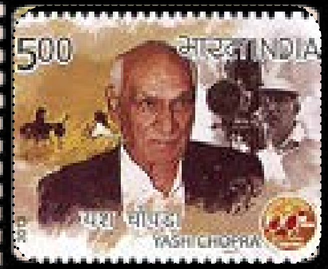

2001 (49th NFA)

YASH CHOPRA

HINDI

2002 (50th NFA)

DEV ANAND

HINDI

2003 (51st NFA)

MRINAL SEN

HINDI, BENGALI

2004 (52nd NFA)

ADOOR G

MALAYALAM

2005 (53rd NFA)

SHAYAM BENEGAL

HINDI

2006 (54th NFA)

TAPAN SINHA

HINDI, BENGALI

2007 (55th NFA)

MANNA DEY

HINDI, BENGALI

2008 (56th NFA)

V.K. MURTHY

HINDI

2009 (57th NFA)

D. RAMANAIDU

TELUGU

2010 (58th NFA)

K. BALACHANDER

TAMIL

2011 (59th NFA)

S. CHATTERJEE

BENGALI

2012 (60th NFA)

PRAN

HINDI

2013 (61st NFA)

GULZAR

HINDI

2014 (62nd NFA)

SHASHI KAPOOR

HINDI

2015 (63rd NFA)

MANOJ KUMAR

HINDI

2016 (64th NFA)

K. VISWANATH

TELUGU

2017 (65th NFA)

VINOD KHANNA

HINDI

2018 (66th NFA)

A. BACHCHAN

HINDI

2019 (67th NFA)

RAJINIKANTH

TAMIL

2020 (68th NFA)

ASHA PAREKH

HINDI

"अगर एक्टर ही प्रोड्यूसर है तो एक्टर को खुद अनुशासन में रहना पड़ता है कि कम समय और बजट में फिल्म खत्म करनी है। अगर डायरेक्टर ने स्क्रिप्ट लिखी है और दोनों के बीच में ट्यूनिंग अच्छी है तो फिल्म बेहतर तरीके से उभरकर आती है।

शिवम नायर, निर्देशक"

मैं स्क्रिप्ट पढ़ती हूं। मेरी स्क्रिप्ट रीडिंग बहुत अच्छी है। मैं स्क्रिप्ट पढ़ने के बाद, उसके हिसाब से अभिनय करने का प्रयास करती हूं। मैं वैसी ही किरदार अपने अंदर ढाल लेती हूं।

अलका अमीन, अभिनेत्री

ऐसे बहुत गीतकार हैं जिनके साथ मैं काम करना चाहती हूं। नेटफ्लिक्स पर मैंने स्वानंद किरकिरे सर के साथ काम किया है। उनके साथ काम करके मुझे बहुत अच्छा लगा और बहुत कुछ सीखने को भी मिला। मैं चाहती हूं कि उनके द्वारा लिखे और गाने कंपोज करूं, उनका लहजा मुझे बहुत पसंद है।

सयाली खरे, गायक

LIGHT | CAMERA | ACTION

हिंदी पत्रकारिता विभाग, भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली